अगस्त 2018

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

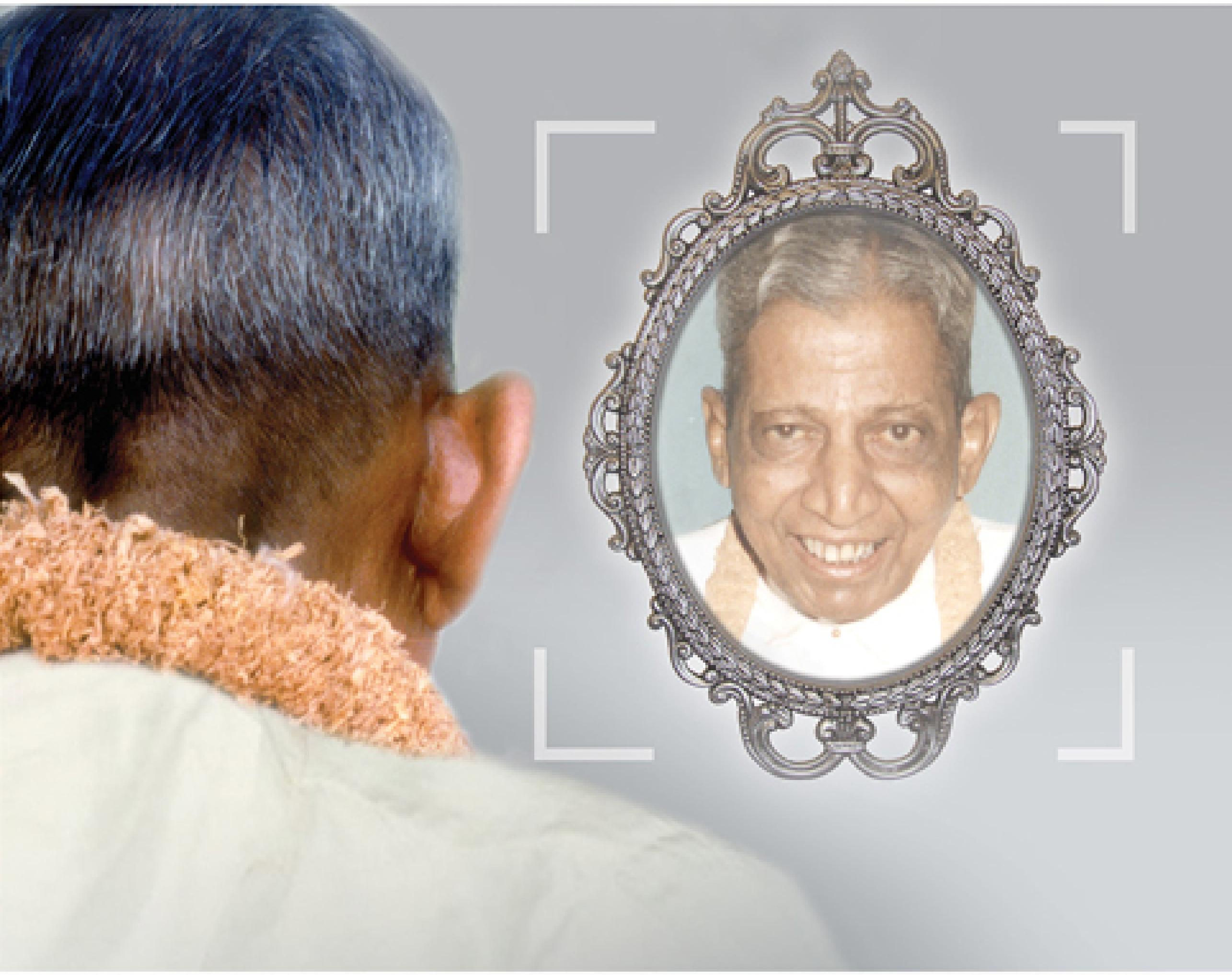

यह दर्पण तो सब से बड़ा साइन्स है! दर्पण बहुत इफेक्टिव है। तुझे जितना लाभ उठाना हो उतना दर्पण के सामने बैठकर सामायिक करना तो अति उत्तम है। सामने ही दर्शन होते हैं !

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 13 अंक : 10
अखंड क्रमांक : 154
अगस्त 2018

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Editor : Dimple Mehta
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.
Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Total 32 pages (including cover)

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अरीसा सामायिक का प्रयोग

संपादकीय

अक्रम विज्ञान में आत्मा को जानने के बाद 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसी जागृति रहती है। वह जागृति जाती ही नहीं फिर भी महात्माओं को बार-बार ऐसी शिकायत रहती है कि कई बार तन्मयाकार हो जाते हैं। 'खुद' परमात्मा और 'चंदूभाई' फाइल नंबर-वन, भेद ज्ञान से इन दोनों के बीच भेद रेखा डाल दी है, जो प्रतीति के रूप में है। अब खुद 'अपने आपसे,' 'चंदूभाई' से जुदापन का अनुभव कब कर पाएगा? 'चंदूभाई' से जुदापन रहे, उसके लिए 'चंदूभाई' से बातचीत का प्रयोग बहुत ही प्रभावी सिद्ध हुआ है और इस प्रयोग को अनुभव की कक्षा तक ले जाने के लिए दादाश्री ने एक अनोखा प्रयोग यानी कि 'अरीसा सामायिक' के बारे में बताया है।

आत्मा का फिज़िकल (स्थूल) वर्णन करने के लिए दर्पण ही एक साधन है। आत्मा दर्पण जैसा है। जिस प्रकार दर्पण में बाहर की चीज़ें दिखाई देती हैं उसी प्रकार आत्मा में भी ब्रह्मांड दिखाई देता है। अब, दर्पण के गुणधर्मों को समझकर, दर्पण में चंदू को अलग देखने का प्रयोग दादाश्री की अपनी खोज है। चंदूभाई को अलग जानने और अलग दिखाई दे उसके लिए अगर दर्पण के सामने बैठा दें तो, वे आपको एक्ज़ेक्टली अलग दिखाई देंगे या नहीं? यह *पुद्गल* भाग और यह चेतन भाग इस प्रकार से दर्पण में सभी कुछ दिखाई देता है।

यहाँ पर परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) अरीसा सामायिक के बारे में बताते हैं, 'हम चंदू को अलग समझते हैं लेकिन चंदू कैसे अलग दिखाई देगा?' चंदूभाई क्या-क्या कर रहा है? चाय पी, खाया-पीया, इन सब को अलग देखो, इसी अभ्यास के लिए यह प्रयोग दिया गया है। यहाँ पर दादाश्री ने, अलग-अलग व्यक्तियों के साथ, अलग-अलग संयोगों में, अलग-अलग तरह से समझाया है, जिसमें वाचक को ऐसा लग सकता है कि यह रिपीट हो रहा है लेकिन इसमें दादाश्री की करुणा और उनके सिद्धांत दिखाई देंगे।

दादाश्री कहते हैं कि जिस प्रकार हम औरों का निरीक्षण करते हैं उसी प्रकार से चंदूभाई का निरीक्षण करना है। लोगों में औरों का निरीक्षण करने की शक्ति है लेकिन खुद की फाइल नंबर-वन को देखने में भूल हो जाती है क्योंकि अनादि से ऐसा अभ्यास ही नहीं है न इसलिए वहाँ पर कच्चा रह जाता है। चंदूभाई को दर्पण के सामने बैठाकर उनकी जितनी भी भूलें हैं, वे हम उन्हें एक घंटे तक बताएँ, वही सब से उत्तम सामायिक है।

ऋषभदेव भगवान के समय में, भरत चक्रवर्ती ने भी अंत में अरीसाभवन (शीशमहल) का आसरा लिया था, तभी काम हो पाया। आत्मा जानने के बाद, दर्पण के सामने चंदूभाई से बातचीत के प्रयोग द्वारा, आत्मा प्रकृति से अलग हो जाता है। अब, महात्मा अरीसा सामायिक का उपयोग करके, फाइल नंबर वन को अलग देखकर, शुद्धात्मा अनुभव के पुरुषार्थ की शुरुआत करें, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अरीसा सामायिक का प्रयोग

दर्पण के सामने बैठकर, होते हैं चंदू के दर्शन

प्रश्नकर्ता : दादा, आप यहाँ दर्पण रखते थे न, तब नीरू बहन ने कहा कि 'शायद अरीसा सामायिक कर रहे होंगे।' तो दादा, यह अरीसा सामायिक क्या है?

दादाश्री : दर्पण (अरीसा) में जो दिखाई देता है न, उसके साथ सामायिक करनी है। सामने कुछ दिखाई देता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दिखाई देता है।

दादाश्री : कौन दिखाई देता है?

प्रश्नकर्ता : चंदू दिखाई देता है।

दादाश्री : और उस क्षण तू कौन है?

प्रश्नकर्ता : मैं शुद्धात्मा हूँ।

दादाश्री : हाँ... यानी ऐसी सामायिक करना। दर्पण इफेक्टिव है। यदि तुझे लाभ उठाना हो तो दर्पण के सामने बैठकर सामायिक करना अति उत्तम है। सामने ही दर्शन!

अलग देखने के लिए अरीसा प्रयोग

प्रश्नकर्ता : आपने बात बतायी न कि दर्पण में देखकर खुद के साथ बातचीत करनी है तो शुरुआत में वह प्रक्रिया ज़रा मुश्किल लगती है।

दादाश्री : नहीं, नहीं। मुश्किल कैसी? चंदूभाई को यहाँ पर दाग़ लगा हुआ हो तो आपको दिखाई देगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : दिखाई देगा।

दादाश्री : जो दाग़ पड़े हुए हैं और दिखाई देते हैं, वे चंदूभाई और आप अलग हो। आप चंदूभाई से कह सकते हो कि, 'भाई, इस तरह से करना।' तो चंदूभाई में परिर्वतन आ जाएगा। अलग होकर काम करो।

अलग जाना लेकिन अलग दिखाई देगा दर्पण में

प्रश्नकर्ता : अत: धीरे-धीरे चंदू से अलग रहा जा सके, यह प्रयोग क्या उसके लिए है?

दादाश्री : कोई भी निश्चय करें लेकिन प्रयोग करने में पाँच-छ: दिन का समय लगता है। जैसे कि चंदू क्या कर रहा है, वह देखते रहना है, वह तो देखना आ जाएगा न, तुरंत? चंदू क्या कर रहा है, वह देखते रहना, क्या इन सब को वैसा करना नहीं आता?

प्रश्नकर्ता : आता है।

दादाश्री : तुझे खुद को देर लगेगी क्योंकि ड्राइवर को ऐसा लगता है कि पूरी बस की बॉडी ही उसका खुद का शरीर है। इतनी लंबी बस होती है न, साठ फुट लंबी फिर भी वह ड्राइवर वहाँ पर बैठा-बैठा, जैसे कि वह उसका शरीर

हो उसी प्रकार से यह ध्यान रखता है कि बस का कोना कहीं छुए नहीं क्योंकि उसने तय किया है कि यह मेरा ही शरीर है, मेरी ही बॉडी है इसीलिए बस का कोना टकराने से बच जाता है। अरे! क्यों इतनी सी दूरी में से बच गया? क्योंकि खुद ने तय किया था!

उसी प्रकार तूने तय कर लिया कि 'मैं ही चंदू हूँ' तो फिर कैसे दिखाई देगा? इस ज्ञान को जान लिया कि हम इससे अलग हैं, वह जान लिया लेकिन वह दिखाई कैसे देगा?

प्रश्नकर्ता : यह जो पहले तय किया था, वह बीच में रुकावट डालता है।

दादाश्री : इसलिए दर्पण में देखकर अलग देखने का प्रयत्न करते रहना, तो ठीक हो जाएगा। इतना लंबा दर्पण है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : है।

सामने बैठाकर करे ज़ोर से बातचीत

दादाश्री : अब आपको क्या करना है कि आपको चंदूभाई को दर्पण के सामने बैठाकर उनसे बातचीत करनी पड़ेगी कि 'आप सड़सठ साल की उम्र में रोज़ सत्संग में आते हो, उसका बहुत ध्यान रखते हो, वह बहुत अच्छा काम करते हो!' परंतु साथ ही साथ यह भी समझाना और सलाह देना कि, 'देह का इतना ध्यान क्यों रखते हो? देह में ऐसा होता है, वह भले ही हो। आप हमारे साथ यों टेबल पर आ जाओ न! हमारे पास अपार सुख है!' ऐसा आपको चंदूभाई से कहना चाहिए। चंदूभाई को ऐसे दर्पण के सामने बैठाया हो तो वह आपको यों एक्ज़ेक्ट दिखाई देंगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : अंदर बातचीत तो मेरी घंटों तक चलती है।

दादाश्री : परंतु अंदर बातचीत करने में बाकी लोग फोन ले लेते हैं इसलिए उन्हें सामने बैठाकर ज़ोर से बातें करनी चाहिए, ताकि कोई और फोन ले ही नहीं!

प्रश्नकर्ता : खुद को सामने किस तरह बैठाएँ?

दादाश्री : तू सामने बैठाकर 'चंदूभाई' को डाँटेगा तो 'चंदूभाई' बहुत समझदार बन जाएँगे। तू खुद ही डाँटे कि, 'चंदूभाई, ऐसा कहीं करना चाहिए? यह आपने क्या लगा रखा है? और कर रहे हो तो अब सीधा करो न?' आप कहो ऐसा तो क्या बुरा है? क्या कोई और झिड़के तो अच्छा लगेगा? इसलिए हम आपको 'चंदूभाई' को डाँटने का कहते हैं, नहीं तो बिल्कुल अंधेर ही चलता रहेगा! यह *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) क्या कहता है कि आप तो 'शुद्धात्मा' बन गए लेकिन हमारा क्या? वह दावा दायर करता है, वह भी हक़दार है। वह भी इच्छा रखता है कि 'हमें भी कुछ चाहिए' इसलिए उसे पटा लेना चाहिए। वह तो भोला है। भोला इसलिए है कि मूर्ख की संगत मिले तो मूर्ख बन जाता है और समझदार की संगत मिले तो समझदार बन जाता है। चोर की संगत मिले तो चोर बन जाता है! जैसा संग वैसा रंग! परंतु वह खुद का हक़ छोड़ दे, ऐसा नहीं है।

यदि उसे (चंदू को) पटाएँ तो वह सब कुछ छोड़ दे ऐसा है। उसे समझाएँ तो वह सब कुछ छोड़ दे ऐसा समझदार है।

चंदू को खुद ही डाँटना

दर्पण में सामने जो चंदूभाई दिखाई देते हैं, उसमें (खुद) एक आत्मा है और सामने जो खड़े हैं, वे चंदूभाई हैं। हमें उनसे कहना है कि, 'चंदूभाई, ऐसी-वैसी भूलें कब तक करोगे? ज़रा आपको डाँटना पड़ेगा,' ऐसा भी कहना है।

आप कभी दर्पण में देखकर चंदूभाई को डाँटते हो? दर्पण के सामने बैठाकर चंदूभाई से कहना कि, 'आपने पुस्तकें छपवाईं, ज्ञान दान किया, वह तो बहुत अच्छा काम किया है लेकिन बाकी, आप ऐसा सब करते हो, वैसा करते हो। ऐसा क्यों करते हो।' अपने आप से ऐसा कहना पड़ेगा या नहीं? क्या सिर्फ दादा ही बार-बार कहते रहें? उसके बजाय अगर आप भी कहेंगे तो वे मानेंगे, आपका ज़्यादा मानेंगे! जब मैं कहता हूँ तब आपके मन में क्या होता है? दादा (खुद के शुद्धात्मा) जो मेरे पड़ोसी हैं, वे मुझे कुछ नहीं कहते हैं फिर आप क्यों कह रहे हो? इसलिए आप खुद ही डाँटो।

औरों की सारी भूलें निकालनी आती हैं और खुद की एक भी भूल निकालनी नहीं आती लेकिन आपको तो भूलें नहीं निकालनी हैं, आपको तो ज़रा 'चंदूभाई' को डाँटना ही है। आप तो 'चंदूभाई' की भूलें जान गए हो इसलिए अब 'आपको' चंदूभाई को डाँटना है फिर चंदूभाई तो 'मानी' है, सभी तरह से 'मान वाले' हैं इसलिए उन्हें ज़रा पटा देंगे तो सब काम हो जाएगा।

अब यह डाँटने का अभ्यास आपको कब करना है? अपने घर पर डाँटने के लिए एक-दो लोग रखें परंतु वे सच में नहीं डाँटेंगे न! जब सही में डाँटेंगे तभी परिणाम आएगा। वर्ना झूठा, बनावटी डाँटने से परिणाम नहीं आता। यदि आपको कोई डाँटने वाला हो तो उसका लाभ उठाना चाहिए लेकिन ऐसा करना नहीं आता न?

प्रश्नकर्ता : यदि कोई डाँटने वाला हो तो हमें अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : वह अच्छा नहीं लगता परंतु यदि रोज़ डाँटने वाले मिल जाएँ तो फिर हमें *निकाल* (निपटारा) करना आ जाएगा न कि यह तो रोज़ का लगा है तो कहाँ अंत आएगा? उसके बजाय तो हम अपनी 'गुफा में' घुस जाए न!

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि 'मैं जीव नहीं परंतु शिव हूँ' लेकिन वह अलग नहीं हो पाता।

दादाश्री : वह अपना भाव नहीं छोड़ता न! वह अपना हक़ छोड़ेगा क्या? इसलिए उससे हमें समझा-बुझाकर काम लेना पड़ेगा क्योंकि वह तो भोला है। *पुद्‌गल* का स्वभाव कैसा है? भोला है इसलिए उसके साथ ऐसी कुछ कला करेंगे तो वह पकड़ में आ जाएगा।

यह है सब से उत्तम सामायिक

अत: तुझे 'चंदूभाई' को दर्पण के सामने बैठाकर इस तरह से प्रयोग करना दर्पण में तो चेहरा वगैरह सब दिखाई देता है फिर आप 'चंदूभाई' से कहें 'आपने ऐसा क्यों किया? आपको ऐसा नहीं करना है। पत्नी के साथ मतभेद क्यों करते हो? तो फिर आपने शादी क्यों की? शादी करने के बाद ऐसा क्यों करते हो?' ऐसा सब कहना पड़ेगा। इस तरह दर्पण में देखकर एक-एक घंटा डाँटोंगे तो शक्ति बहुत बढ़ जाएगी। यह बहुत उत्तम सामायिक कहलाती है। आपको चंदूभाई की सभी भूलों का पता चलता है न? आपको जितनी भूलें दिखाई दें उतनी अगर आपने एक घंटे तक चंदूभाई को दपर्ण के सामने बैठाकर बता दीं तो वह सर्वोत्तम सामायकि है!

प्रश्नकर्ता : हम दर्पण में न करें और ऐसे ही मन के साथ अकेले-अकेले बात करें, तब वह नहीं हो सकता?

दादाश्री : नहीं, वह नहीं होगा। वह तो दर्पण में आपको चंदूभाई दिखने चाहिए। अकेले-अकेले मन में करोगे तो नहीं आ पाएगा। अकेले-अकेले करना, वह तो 'ज्ञानीपुरुष' का काम।

परंतु आपको तो ऐसे ही बालभाषा में सिखलाना पड़ेगा न? और यह दर्पण है तो अच्छा है, नहीं तो लाख रुपये का दर्पण खरीदकर लाना पड़ता। ये तो सस्ते दर्पण हैं! ऋषभदेव भगवान के समय में अकेले सिर्फ भरत चक्रवर्ती ने ही शीशमहल बनवाया था! और अभी तो इतने बड़े-बड़े दर्पण सब जगह दिखते हैं!

यह सब परमाणु की थ्योरी है। यदि दर्पण के सामने बैठाकर करो न तो बहुत काम निकल जाए, ऐसा है परंतु कोई करता नहीं है न? हम कहें तब एक-दो बार करता है और फिर वापस भूल जाता है!

समझो प्रयोग जुदापन का

प्रश्नकर्ता : आप सत्संग में थोड़ी-थोड़ी देर में जुदा रखने का प्रयोग बताते ही हैं।

दादाश्री : मुख्य चीज़ वही है न!

प्रश्नकर्ता : मन कुछ बताए तो मन से कह देना कि, 'तेरा कुछ नहीं चलेगा।' मन से बात करते ही वह अलग हो ही जाता है।

दादाश्री : हाँ, अलग ही हो जाता है और इस शरीर को 'फाइल नंबर-वन' कहा, तब भी अलग हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : यह जो आपका जुदापन का प्रयोग है, वह किस प्रकार से है? क्या आपको वह आसानी से ही एक्ज़ेक्ट अलग दिखाई देता है?

दादाश्री : दिखाई देता है। यह *पुद्गल* भाग और यह चेतन भाग; इसी तरह से पूरा पहचान जाते हैं। ऐसी जागृति रहती है। जैसे कि लौकी की सब्ज़ी बनानी हो तो जागृति रहती है कि छिलके निकालकर फेंक देने हैं, डंडी अलग करके फेंक देनी है। फिर काट देते हैं! इसी तरह से हम में जड़ और चेतन अलग ही रहते हैं।

ज्ञाता-दृष्टा रहना अर्थात् क्या कि 'चंदूभाई क्या कर रहे हैं,' उसे आप जानते रहो, चंदूभाई बच्चे को थप्पड़ लगाकर, कलह कर रहे हो तो हमें जानना है कि चंदूभाई अभी भी कलह कर रहे हैं। हमें चंदूभाई से कहना ज़रूर है कि 'यह बेकार ही कलह क्यों कर रहे हो?' हाँ, खुशी से कह सकते हो और कभी उसे डाँट भी देना है, 'चंदूभाई, ऐसा क्यों कर रहे हो,' 'शुरू से ही, शादी हुई तभी से ऐसे ही थे वे। अब ज़रा सीधे हो जाओ न, भाई। दादा मिल गए हैं अब तो!'

प्रश्नकर्ता : हाँ, आपने अलग कर दिया है उसके बाद ये चंदूभाई सामने जवाब देते हैं कि, 'नहीं, मैं तो ऐसा ही करूँगा।'

दादाश्री : 'नहीं', अब वह नहीं बोलेगा। एक अक्षर भी नहीं बोलेगा।

इस प्रकार प्रकृति से अलग हो जाता है आत्मा

दर्पण में देखकर रोज़ चंदूभाई से कहना तो आत्मा अलग होता जाएगा। प्रकृति से आत्मा लपटा (जैसे बोतल में कार्क ढीला हो जाना) हो गया तो समझो काम हो गया। बोतल का कार्क अगर ढीला हो जाए न तो वह काम में नहीं आता न? लोग कहते भी हैं कि, 'ढीला हो गया है'। ढीला हो जाता है न? और प्रकृति से आत्मा अलग हो जाए तब तो अच्छा है। हम उसे बंद करने जाएँ फिर भी वापस अलग का अलग ही रहता है। दर्पण में देखकर ज़रा कहोगे न, तब आत्मा अलग हो जाएगा फिर अगर हम मज़बूती से लगाने जाएँगे फिर भी नहीं लगेगा। अलग हो गया है। दिया हुआ आत्मा शुद्धात्मा है, अलग होने के बाद और कोई बिगाड़ नहीं होगा। दिया हुआ शुद्धात्मा है इसलिए अलग हो सकता है।

हम पूछेंगे तब जवाब मिलेगा। आप चंदूभाई

से बातचीत करो न, कभी की है क्या? आप चंदूभाई से पूछना की 'क्या आपको कभी हिंसा करने के भाव होते हैं?' तब वे 'मना' करेंगे। 'किसी का कुछ ले लेना है?' तब कहेंगे, 'नहीं'। पूछेंगे तो जवाब देंगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : देंगे?

दादाश्री : क्योंकि मिश्रचेतन है न! हाँ, आत्मा को कुछ भी नहीं करना पड़ता। यह मिश्रचेतन सिर्फ आत्मा की उपस्थिति से ही चल रहा है!

वेदनीय गुण है पड़ोसी का

प्रश्नकर्ता : खुद का जो स्वभाव है चंदूभाई का, उसका पृथक्करण कैसे करेंगे?

दादाश्री : चंदूभाई से हमें क्या लेना-देना? आप शुद्धात्मा बन गए न! चंदूभाई तो पड़ोसी है, फाइल नंबर वन। आपको क्या लेना-देना? यदि उसका कोई क्लेम (दावा) हो तो मुझे बताओ। हम उससे अलग हो गए हैं। अलग हो जाने के बाद, दो भाईयों के खेत का बँटवारा होने के बाद उस तरफ की भिंडी कोई नहीं लेता। यदि ले ली तो भाई झगड़ा करेंगे। बँटवारे से पहले सब कुछ ले सकते हैं। जब तक साझे में हो तब तक। बँटवारे से पहले ही झंझट है, बँटवारे के बाद नहीं।

प्रश्नकर्ता : जब तक बँटवारा नहीं होता तब तक साझे में हैं, ऐसा ही समझते हैं न!

दादाश्री : साझेदारी समझकर ही यह सब किया है लेकिन उसमें मैंने डिमार्केशन लाइन(भेदरेखा) भी डाल दी है। अब हमेशा के लिए पहेली सुलझ जाएगी लेकिन फिर भी कहता है कि, 'मुझे खाँसी हो गई।' 'अरे! खाँसी किसे हुई है। उसे जानना!'

प्रश्नकर्ता : जानने से अशाता वेदनीय, शाता वेदनीय में बदल जाएगी न?

दादाश्री : बदल जाएगी न, तुरंत ही। जो वेदनीय गुण है वह पड़ोसी का है, वेदनीय गुण अपना नहीं है। हम निर्लेप हैं। निर्लेप को कुछ भी नहीं होता। खाँसी आ जाए तो हमें ऐसा लगना चाहिए कि 'खाँसी आई है'। 'मुझे आई है', ऐसा नहीं लगना चाहिए। ऐसा लगे कि अपने साथ वाले को बहुत खाँसी हो रही है। अनादि से उल्टा अभ्यास है इसलिए वह आदत पड़ गई है। अत: हमें अनादि काल का अभ्यास बदलना पड़ेगा न!

प्रश्नकर्ता : खाँसी से कोई परेशानी नहीं है लेकिन जो दु:ख होता है न, उसमें परेशानी है।

दादाश्री : पराई भिंडी, एक बार दिखा दी, उसके बाद उसे अलग रखने में क्या परेशानी है? मन-वचन-काया के लेपायमान भावों को 'मेरे हैं' कहने से वे उछल-कूद करते हैं लेकिन 'ये मेरे नहीं हैं' ऐसा कहा कि वे बंद हो जाते हैं। जब तक हम पक्का नहीं करेंगे कि यह भिंडी की लाइन मेरी नहीं है, तब तक किसान और सभी लोग शोर मचाएँगे। यह तो हम अपने अनुभव की बातें बता रहे हैं। जिनका हमें अनुभव हुआ है, उनकी। अत: आपको दो-तीन बार कहना पड़ेगा कि 'भाई, अब यह मेरा नहीं है' तो उन लोगों का बोलना बंद हो जाएगा। ऐसा तो करना पड़ेगा न? क्या यों ही कुछ होता है?

अदंर शाता रहनी चाहिए, बाहर भले ही अशाता हो। बाहर तो घड़ी में बुखार चढ़े-उतरे, सिर भी दु:खे, 'यह चिट्ठी हमारी नहीं है, यह बात हमारी नहीं है' इस तरह से दर्पण में देखकर बात करना। दर्पण के सामने रहने से ऐसा अलगपन का व्यवहार हो सकेगा।

हमारे रास्ते आपको बता रहे हैं

प्रश्नकर्ता : इन सभी परवशताओं से कैसे मुक्त हों?

दादाश्री : परवशता तो चंदूभाई को है। आपको तो नहीं है न! आपको चंदूभाई से कहना है, 'हम हैं न आपके साथ। तुझे कोई परेशानी है? घबराना मत। तू लोगों के वश मत रहना, हमारे वश रहना। अन्य किसी के वश मत रहना,' ऐसा बोलना। जुदापन की जागृति है लेकिन यदि इस तरह से कहना न आए तो यों दर्पण में दिखाकर बातचीत करना। तुझे दिखाई देता है या नहीं? तुझे अच्छा लगा न? यह रास्ता अच्छा लगा न? हाँ, यदि हमसे पूछे तो, हम जो तरीका अपनाते हैं वही आपको बताते हैं।

प्रश्नकर्ता : फिर हम भी करेंगे न!

दादाश्री : करना हो तो यह रहा दर्पण। कौन मना कर रहा है? 'मैं साथ में हूँ और दादा का रक्षण है, बोल क्या परेशानी है?' बस तो हो जाएगा चुप। हम ऐसा करते थे। उससे बातें करते थे। वर्ना, उसे आश्वासन देने वाला तो कोई है नहीं न! अगर किसी व्यक्ति को बहुत नुकसान हो जाए और कोई कहे 'हम हैं न, तेरे साथ' तो उस बेचारे को रात में नींद आ जाती है लेकिन अभी तो कोई ऐसा कहने वाला है ही नहीं न!

अवस्थाओं को देखना दर्पण के सामने

अवस्थाएँ मात्र विनाशी हैं और वे बदलती रहती हैं। चेन्जेबल हैं, ऐवर चेन्जेबल! जैसे कि गाड़ी चलती रहती है न, उसी तरह से अवस्थाएँ बदलती रहती हैं जबकि तत्त्व वही का वही रहता है। जिस अवस्था को आप ऐसा मानते थे कि, 'यह मैं ही हूँ,' उस अवस्था की वजह से शरीर बीमार पड़ता है, शरीर को बुखार आया तो कहता है कि 'मुझे बुखार आया।' शरीर के भीतर पेट में दर्द है तो कहता है 'मुझे दर्द है।' यदि शरीर थक जाए तो कहता है कि, 'मैं थक गया हूँ।' यानी वह खुद ही आरोपण करता था। अब वह अलग और हम अलग। हम जानते हैं कि चंदूभाई थक गए हैं, इसलिए हम चंदूभाई से कहेंगे, 'सो जाओ न! ज़रा आराम वगैरह करो! सब हो जाएगा, क्या जल्दी है!' यदि कभी बहुत डिस्करेज हो जाए तो बड़े दर्पण होते हैं न, वहाँ जाकर कहना, 'चंदूभाई कैसे हो? ऐसे डिस्करेज क्यों हो गए हो, हम हैं न आपके साथ।' इस तरह पीछे से कंधा थपथपाना। ऐसे कहेंगे तो वे खुश! ओहोहो! अभी तक कोई कहने वाला नहीं मिला था, आप हो तो अब मुझे परेशानी नहीं है। बाकी, पत्नी भी ऐसा नहीं कहेगी कि, 'हम हैं'। वह अगर पत्नी से कहे कि, 'मुझे पाँच लाख का नुकसान हो गया है और तू मुझे कुछ सहारा दे।' तो वह कहेगी, 'आप हो ही ऐसे तो मैं क्या करूँ?' फिर तो इज़्ज़त ही चली जाएगी न! ये तो सहारा देते हैं न कि, 'हम हैं तेरे साथ।' जिस तरह से मैं आगे बढ़ा हूँ न, उसी तरह से मैं बता रहा हूँ। एक्सपिरीयन्स (अनुभव) से। दर्पण के सामने खड़े रहकर कहना, 'क्यों चंदू, मज़े में हो न!' फिर हमें कहना, 'कल क्यों डिस्करेज हो गए थे? हम हैं, आप घबराना मत' तो वापस खुश हो जाएगा। अगर ट्रेन में बैठे हों और पैर-वैर बहुत अकड़ जाएँ और बहुत परेशान हो जाओ तो संडास में जो दर्पण होता है न, वहाँ पर जाकर कहना कि 'बहुत बोर हो गए हो, बोरियत वाली जगह है यह लेकिन हम हैं न, आप परेशान मत होना।' सहारा देने वाला कोई है ही नहीं। बाप भी सहारा नहीं देता। अर्थात् जब तक सब नया-नया हो तभी तक! जैसे ही पुराना हुआ तो मेरी-तेरी, यह दुनिया ऐसी ही है। किसी का भी दोष नहीं है। संसार का स्वभाव ही ऐसा है।

वेदना के समय तरीका बदलो

अब आप तरीका बदलो तो वेदना कम होगी, वैसे-वैसे अंदर से अधिक सुख आएगा क्योंकि बाहर उलझता है तो अंदर से सुख आना कम हो जाता है। आप 'चंदूभाई' को दर्पण दिखाओ, ऐसे हाथ-वाथ फेरकर कहो, 'हम हैं और आप हो। दो हैं, वह तो पक्का है न? उसमें बनावट नहीं है न?'

प्रश्नकर्ता : नहीं, दो ही हैं।

दादाश्री : ये 'पड़ोसी' कुछ जानते नहीं हैं, वह बात भी पक्की है न? और आप जानकार हो। पड़ोसी को कुछ मालूम नहीं कि सिर में दर्द है। मालूम आपको है इसलिए आप कहना कि, 'सिर दर्द कर रहा है वह हम जानते हैं। वह अभी ठीक हो जाएगा, शांति रखो!' पड़ोसी को तो हमें संभालना ही चाहिए न? और पूरणपूरी (व्यंजन) अच्छी हो, शुद्ध घी हो तो दो खिला भी देना! 'खाकर सो जाओ', कहना। *पाडाने वांके पखाली ने डाम* (भैंसे की भूल की सज़ा चरवाहे को) किसलिए?

जिसे दुःख रहा है उसे समझो सौतेला

जब से सौतेला मानने लगते हैं तब से अपना मन अलग हो जाता है। जब तक हम अपने मामा को सगा मानते हैं तब तक मामा के यहाँ हिलमिलकर रहते हैं लेकिन अगर एक बार माँ बता दे कि 'अरे! ये तो तेरे सौतेले मामा हैं, तेरे सगे नहीं हैं तभी से मन अलग पड़ जाता है। ऐसा नहीं होता? यह सब सौतेला है।

एक व्यक्ति ने मुझसे कहा, 'मेरा पैर बहुत दुःख रहा है। दुःख रहा है तो मैं क्या करूँ? हं, ज़रा इस पर हाथ फेर दीजिए न!' मैंने कहाँ, 'ले न! हाथ फेर देता हूँ।' तब कहने लगा 'कुछ कम नहीं हो रहा है।' तब मैंने कहा, 'तेरा यह पैर तो पराया है, तेरा सगा नहीं है। इसे तू सगा मान बैठा है, जबकि यह तो पराया है।' मैंने कहा, 'बोल पाँच बार, यह पैर पराया है और यह मेरा सगा है। यह मेरा सगा और यह पराया, जो दर्द दे रहा है वह पराया है। तूने बोला तो देख मिट गया न?'

प्रश्नकर्ता : दादा, उस दिन मुझे बुखार आया था, तब आपने मुझे यह उदाहरण दिया था, मैंने पाँच मिनिट तक बैठकर ऐसा किया तो बुखार उतर गया।

दादाश्री : उतर ही जाएगा, जब हम कहते हैं कि, 'यह सगा है और यह पराया,' तभी से उसके सारे भाव खत्म हो जाते हैं और सब कुछ शांत हो जाता है। अतः पराया कहना, अब मन के लिए ऐसा नहीं रह सकता। उसे ज़रा आमने-सामने दिखाना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : दर्पण में देखता है ऐसा?

दादाश्री : वह उपाय अच्छा रहेगा या नहीं? दादा जो चाबियाँ देते हैं उनसे सभी ताले खुल जाते हैं।

दादा सिखाते हैं 'चंदू' की भाषा

प्रश्नकर्ता : इस प्रकार से बोलने से वास्तव में जुदापन का व्यवहार शुरू हो जाता है।

दादाश्री : इस प्रकार हँसी-मज़ाक करने से, देखने से, जुदापन आ जाता है। मैं तो ऐसा भी पूछता हूँ न, 'कैसे हो? मज़े में हो न? अंबालाल भाई, आनंद में आ गए हो, कुछ तो है!' तभी तो हम फ्रेश (ताज़े) रह सकते हैं न! इससे हम पूरे दिन फ्रेश रहते हैं। तो बस यही काम करता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, एकदम यंग दिखाई दे रहे हैं आज।

दादाश्री : सभी हमेशा ऐसा ही कहते हैं फिर मैं भी दर्पण में देखता हूँ कि ये कैसे दिखाई दे रहे हैं? मुझे भी यंग दिखाई देते हैं। सभी कहते हैं तो फिर भीतर असर होता है न। वर्ना, कभी भी ऐसा नहीं बोलता कि, 'मैं बूढ़ा हूँ' क्योंकि मैं तो शुद्धात्मा हूँ, बूढ़े तो ये हो रहे हैं, शरीर हो रहा है। वह बोल नहीं सकता। हमारे पूछे बगैर कैसे बोल सकेगा? व्यवहार में कहते हैं कि 'ये भाई बूढ़े हैं' लेकिन 'मैं बूढ़ा हूँ' ऐसा नहीं बोल सकते क्योंकि 'मैं तो शुद्धात्मा हूँ।' अत: हमारे सारे हिसाब अलग ही तरह के होते हैं। 'मैं शुद्धात्मा' बनकर अगर वास्तव में बोले 'मैं बूढ़ा हूँ,' तो आप वैसे ही बन जाओगे इसलिए जब आप कहो कि 'मैं बूढ़ा हो गया' तो वह आप खुद के लिए नहीं कह रहे हो लेकिन अंदर जानते हो कि, 'मैं अलग हूँ' और ये तो चंदूभाई के लिए कहा जा रहा है। तब फिर आप पर असर नहीं होता। इस वर्ल्ड में, बोला हुआ एक-एक शब्द इफेक्टिव है!

'चंदूभाई' कहें कि 'मेरी तबियत खराब है' तब 'हमें' भीतर यही समझना है कि चंदूभाई की तबियत खराब है लेकिन मेरी तो नहीं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ दादा। चंदूभाई के लिए कहना है। हमें ऐसा पोज़िटिव कहना है कि तबियत अच्छी है।

दादाश्री : हाँ तो ऐसा कहो कि 'तबियत अच्छी है।' चंदूभाई कहें कि 'मेरी तबियत खराब है।' तब हमें कहना है, 'नहीं! अच्छी है।' इससे ज़्यादा कुछ नहीं होगा लेकिन उसे शांति रहेगी! वर्ना अगर आप खुद कहो कि 'मेरी तबियत अच्छी है' तो अच्छी हो जाएगी। अगर आप खुद कहो कि 'मेरी तबियत खराब है' तो खराब हो जाएगी। यानी कि जैसा चिंतन करता है वैसा ही बन जाता है! 'मैं अलग और चंदूभाई अलग।' कभी भी खुद उसमें एकाकार नहीं होना है। 'चंदूभाई को भूख लगी है, चंदूभाई को खाना है, चंदूभाई ने खाना बनाया, चंदूभाई को समझ में नहीं आया, चंदूभाई को समझ में आ गया!' ऐसी भाषा रखो।

जब तक आसानी से न रहने लगे तब तक प्रेक्टिस

प्रश्नकर्ता : दादा, खाते समय हमें कैसा रहना चाहिए ताकि जुदापन रहे?

दादाश्री : हमें आदत डालनी चाहिए दर्पण के सामने देखकर। सुबह जब नाश्ता करो तो, 'ओहोहो! चंदूभाई आप तो मज़ेदार नाश्ता कर रहे हो!'

प्रश्नकर्ता : वह तो आहारी आहार करता है। वह बात आ गई।

दादाश्री : नहीं! हमने यह वाक्य तो बोला है कि, 'आहारी आहार कर रहा है,' लेकिन आपको ऐसा कहना चाहिए कि 'चंदूभाई, यह बहुत अच्छा नाश्ता है हं.. रौब से बैठे हो न नाश्ता करने।' तो हम ज्ञाता बन गए। क्या हुआ? लेकिन दर्पण में देखकर प्रेक्टिस करनी पड़ेगी। ज्ञानी को तो बिना दर्पण के ही ऐसा दिखाई देता है।

दर्पण में बातचीत से शक्ति बढ़ती है

दर्पण के सामने बैठकर रोज़ एक-एक, दो-दो सामायिक करो न! पूरा चेहरा दिखाई देगा और इस तरह से करके कहना, 'देख चंदू तुझे बता देते हैं कि तुझे ऐसा नहीं करना है। वर्ना, शादी क्यों की? शादी की है तो अब ऐसा करो,' इस तरह से सब कहना पड़ेगा। क्या?

प्रश्नकर्ता : सही बात है, दादा। मन में ऐसा होता भी है। दर्पण के सामने नहीं लेकिन मन में यों पूरी फिल्म दिखाई देती है कि, 'यह मेरी गलती है, मैंने यह भूल की, ऐसा नहीं

करना चाहिए था फिर भी हो गया। वहाँ पर यह प्रश्न आकर खड़ा रहता है कि अब क्या करें? फिर वापस दूसरी उलझन में चले जाते हैं।

दादाश्री : दर्पण में देखकर करने से तो बहुत शक्ति आ जाती है लेकिन करते नहीं हैं न! मेरा कहा करो न!

प्रश्नकर्ता : अब इस तरह से करूँगा।

दादाश्री : घर जाकर भूल जाता है। इन माँ जी को कई बार ऐसा कहा है लेकिन फिर घर जाकर करते नहीं हैं न। कोई करेंगे घर जाकर?

प्रश्नकर्ता : सभी करेंगे।

दादाश्री : दर्पण नहीं हो तो खरीदकर ले आना।

प्रश्नकर्ता : दर्पण में देखकर बातचीत करने का काम तभी हो सकता है जब कोई न हो, अकेले हों तब? चलते-फिरते जागृति रखकर, प्रतिक्षण जागृति कर सकते हैं कि, 'अब देखो' लेकिन इस तरह से बैठकर बातचीत करने की फुरसत नहीं रहती घर पर। बाकी, सब लोग चक्कर मारते रहते हैं!

दादाश्री : चक्कर मारें तो उसमें आपको क्या? रात को दरवाज़ा बंद कर दो तो क्या कोई कुछ कहेगा? आठ बजे ही आप उनसे कह दो कि 'आज तो भाई मेरा सिर ज़रा डिस्टर्ब है। मैं सो रहा हूँ, आप आवाज़ मत देना।' इस तरह से कुछ भी कह देना पड़ेगा। 'दिमाग़ चढ़ गया है', बहुत चढ़ गया है, कहना। ऐसा मत कहना कि दर्द हो रहा है। 'बहुत चढ़ गया है,' कहना।

प्रश्नकर्ता : दिमाग़ बहुत चढ़ गया है।

दादाश्री : हाँ। तब फिर कोई कुछ नहीं कहेगा हर कोई अपने-अपने घोंसले में घुस जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : फिर जब सब सो जाएँ तब उठना।

दादाश्री : सब के सो जाने के बाद आपको अपना काम करते रहना है। वर्ना, लोग तो ऐसे हैं कि दिन में भी कोई चैन से न बैठने दें। और कुछ न हो तो दरवाज़े पर नॉकिंग (ठोकते) करते रहेंगे। रूम में बैठ जाएँ फिर भी नॉक करते (खटखटाते) रहेंगे।

बातचीत का यथार्थ तरीका सामायिक में

अब, आज आप एक ऐसी सामायिक करो। चंदू यहाँ आओ। अब आँखें बंद करके आपको चंदू को सामने बैठाना आता है क्या? मानो चंदूभाई आपके सामने ही बैठे हों, आपको ऐसा दिखाई देता है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ दिखाई देता है।

दादाश्री : विधि करते समय ऐसा करना आएगा? मानो चंदूभाई हमारे सामने बैठे हैं और हम चंदूभाई को डाँटते रहे हैं कि, 'चंदू, ऐसा क्यों करते हो? क्यों ऐसा करते हो? अब सीधे हो जाओ, अब मोक्ष में जाना है।' इस तरह से डाँट सकते हो क्या?

प्रश्नकर्ता : डाँट सकता हूँ।

दादाश्री : ऐसा करना आएगा क्या? चंदूभाई सामने दिखाई देते हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दिखाई देते हैं।

दादाश्री : आप सब को सामने कोई दिखाई देता है क्या? दर्पण में देखो तभी दिखाई देता है वर्ना नहीं दिखाई देता। दर्पण में देखे बगैर नहीं दिखाई देता? आपको सामने शांतिलाल दिखाई देते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा करके देखा नहीं है लेकिन दिखाई देगा।

दादाश्री : इनमें से कितनों को दिखाई दे रहा है?

प्रश्नकर्ता : तुरंत ही दिखाई देता है।

दादाश्री : ऐसा है न, क्या आप सभी बहनों को दिखाई दे रहा है? सामने मंगली को बैठाकर डाँटना कि, 'ऐसा क्यों कर रही हो? ऐसा क्यों कर रही हो?' होगा या नहीं? आपसे होगा? आपको? साहब के साथ कल माथापच्ची क्यों कर रही थीं? ऐसा सब कह सकते हैं। क्या कहना है? हाँ, 'आज एक घंटे तक ऐसा सब कहकर करो।' करना न आए फिर भी बैठो न! बैठोगे तो अपने आप आ जाएगा। मैं बैठा हूँ न! यहाँ प्रत्यक्ष बैठा हूँ न! आँखे बंद करके चंदू को सामने बैठा दो और सभी प्रकार से डाँटते रहो। पूरी ज़िंदगी में, जो-जो दोष हुए हों न, उन दोषों को याद करके डाँटते जाओ। 'आपने ऐसे-ऐसे काम किए। आपने गलत काम करने में कुछ बाकी ही नहीं रखा। यह तो अच्छा हुआ कि दादा मिल गए।' ऐसा सब कहो उनसे। सब बातें करो। 'बचपन में जब आप चार साल के थे तब ऐसा किया था, पाँच साल के थे तब ऐसा करते थे, सात साल के थे तब ऐसा करते थे। नौ साल के थे तब सब्ज़ी चोरी करके लाते थे, पान चोरी करके ले आते थे। ऐसा सब कहकर डाँटो। ऐसा हो सकेगा सभी से?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जैसा भी हो सके वैसा करो न, आज। हम फिर से शुरुआत करें न! पहली बार में बच्चा गिर जाता है लेकिन दूसरी बार मज़बूत हो जाता है न? इसी तरह से करते-करते सब लाइन पर आ जाएगा लेकिन अलग बैठा दो। खुद चंदू से अलग।

प्रश्नकर्ता : दादा, कई लोगों को ऐसा लगता है कि आत्मा को पहचानने के लिए यह ज्ञान मिला है लेकिन कुछ तो करना चाहिए। यह जो करना चाहिए, करना चाहिए है न, तो करने लिए आपने यह बहुत अच्छा दिया!

दादाश्री : करना कुछ है ही नहीं। जहाँ करना है वहाँ संसार है। प्रतिष्ठा करनी या जो कुछ भी करना हो, उससे संसार कायम रहेगा। करना नहीं है, सिर्फ जानना और देखना है। आपका नाम क्या है?

प्रश्नकर्ता : नगीनदास।

दादाश्री : दादा का नाम लेकर शाम को नगीनदास को सामने बैठाओ। दादा से कहना, 'हे दादा, नगीनदास मुझे अलग दिखाई दे, ऐसा कुछ कीजिए,' पाँच बार ऐसा बोलो। अगर नहीं माने तो एक बार माँगो। अपने आप नगीनदास दिखाई देंगे। आँखें बंद करके ठीक से बैठो न आज! और सभी लोग आँखें बंद करके बैठकर बाद में बातचीत करना। बचपन से लेकर देखो व डाँटने लगो जो-जो दोष किए थे, वे सभी अपने आप ही देख-देखकर याद आएँगे। दादा बैठे हैं न! इसलिए याद आएँगे ही। आप उन्हें डाँटना। फलाने के साथ झगड़ा करवाया था, फलाने के साथ तूफान करवाया था, झूठी गवाही दे आए। वह सब आपको याद आएगा और आप मेरे सामने ही यह सब कर लो। डाँटो। प्रतिक्रमण नहीं करना है डाँटना है, 'ऐसा नहीं करना चाहिए ऐसा क्यों किया? यह तो अच्छा हुआ कि दादा मिल गए, मोक्ष का मार्ग मिल गया।' सभी से हो पाएगा। होगा? अगर नहीं हो पाए तो नहीं करते।

महात्मा : हो पाएगा।

दादाश्री : आप बहनों को करना आएगा? मंगली को डाँटोगी?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : खूब डाँटोगे? अच्छा। आपसे होगा न? सामने जैसी भी मूर्ति दिखाई दे वैसी टेढ़ी-मेढ़ी दिखाई दे तो हर्ज नहीं है लेकिन दिखाई देगी, अंदाज़न दिखाई देगी। मंगली दिखाई देगी या नहीं? ऐसा कोई है जिसे एक्ज़ेक्ट दिखाई देता है? ऐसा! कहना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा तो मैं बचपन में करता था। मगनलाल को उस पर बैठाकर खुद ही लकड़ी पर जलाता था। मगनलाल जलता था और मैं देखता था।

दादाश्री : हाँ, ठीक है। बचपन में जो भी हुआ, उसके लिए उसे डाँटो अच्छी तरह से। मारना करना मत, हाँ!? नहीं, हमें उससे काम है, शरीर से तो हमें काम है। उसे तो खिला-पिलाकर अच्छा रखना है। मारना नहीं भाई। बहुत कीमती शरीर है। इस शरीर से ज्ञानीपुरुष को पहचाना, बाकी शरीर तो व्यर्थ चले गए जबकि इस शरीर से तो ज्ञानीपुरुष को पहचान पाए, मोक्ष की शुरुआत हो गई।

जब आप अकेले हों, तभी रूम बंद करके चंदूभाई से कहना, 'बैठो चंदूभाई, हम थोड़ी बातचीत करेंगे। आप ऐसा करते हो, वैसा करते हो, उसमें आपको क्या फायदा? हमारे साथ एकाकार हो जाओ न? हमारे पास तो अपार सुख है!' यह तो उन्हें जुदाई है इसलिए आपको कहना पड़ता है। जिस तरह इस छोटे बच्चे को समझाना पड़ता है, कहना पड़ता है, वैसे ही 'चंदूभाई' को भी कहना पड़ता है, तभी सीधा चलेगा।

आज्ञा लेकर करनी है ठपका सामायिक

एक व्यक्ति ने मुझसे आकर कहा कि, 'मुझसे ऐसा गलत काम हो गया है कि मैं भूल ही नहीं पा रहा हूँ।' अब ज्ञान लिया हुआ वह व्यक्ति भूल नहीं पा रहा है और अंदर उसे कचोट रहा है! यह किस प्रकार का? 'मैंने ज्ञान दिया है फिर भी तुझे ऐसा सब होता है।' तब उसने कहा, 'मुझे ऐसा हो रहा है। वास्तव में जो हो रहा है वही बता रहा हूँ।' मैंने कहा, 'छत पर जाकर तेरी फाइल नंबर वन से कहना।' तो पूछा, 'क्या कहना है' 'अरे, तुम नालायक हो, बदमाश हो, लुच्चे हो, चोर हो। अच्छी तरह से डाँटना, आधे घंटे तक। जिसने गुनाह किया है उसे डाँटना। तू डाँट, यदि फिर भी ठीक नहीं हो तो मेरी ज़िम्मेदारी।' ठीक हो गया! एक ही बार में ठीक हो गया।

'यदि सीधा नहीं हो जाए तो डाँटना', उसे ऐसा कहा था इसलिए फिर उसने तो छत पर जाकर क्या किया? जैसे किसी दूसरे व्यक्ति को डाँटते हैं न, उस तरह से उतना तो डाँटा लेकिन उससे भी ज़्यादा डाँटा तो उसकी फाइल रोने लगी और वह देखता रहा। खूब रोई, ज़ोर-ज़ोर से रोई और वह उसे देखता रहा तो नीचे से आने-जाने वाले लोग कह रहे थे, कि 'अरे, कौन झगड़ रहा है? अरे, कौन इसे डाँट रहा है?' लेकिन फिर ठीक हो गया!

प्रश्नकर्ता : अब जब डाँटता हूँ तब करने के बाद भी और करने से पहले भी पता चल जाता है। तब ऐसा होता है कि 'चंदूभाई को यह चीज़ शोभा नहीं देती' लेकिन हो जाता है।

दादाश्री : जो हो जाता है वह तो दूसरी परत है। ऐसी तो हज़ारों परतें आएँगी। किसी में शायद दो ही परतें हो लेकिन फिर भी आपको डाँटना है। आप डाँटोगे तो आप अलग और वह अलग। उसका आपको अनुभव हुआ है न और आपको डाँटना ही चाहिए और वे परतें तो आती ही रहेंगी। हैं तो आएँगी न! अगर नहीं होंगी तो कैसे आएँगी? इसलिए जितना गाढ़ है उतनी ही ज़्यादा परतें हैं। अत: उसके लिए डाँटना है कि 'ऐसे क्या कर रहे हो?' हम शुद्धात्मा हैं, चंदूभाई

से कहेंगे, 'इतना क्या रौब जमा रहे हो कि इतना गुस्सा कर रहे हो?' हमें बल्कि चंदूभाई को डाँटना है। हम शुद्धात्मा हैं, हमें क्या लेना-देना?

वह व्यक्ति डाँट रहा था और रो रहा था फिर भी उसने क्या कहा 'अब तो तू रोएगा फिर भी मैं तुझ से कन्विन्स (सहमत) नहीं होऊँगा। मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।' उसके बाद उसके सारे दोष चले गए। रोना आ जाए, उतना धमकाया! इस तरह दो शब्द कहने पड़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : अगर खुद ध्यान न दे तो फिर इसी तरह चलेगा न।

दादाश्री : ध्यान नहीं, हम मन का चलने देते हैं इसलिए वह उल्टा चलता रहता है। अत: अन्य कोई डाँटे तो वह नहीं चलेगा, तुझे ही तेरी फाइल नंबर वन को डाँटना पड़ेगा। यह मार्ग तो डाँटने का है ही नहीं न! हम किसी को इस तरह से डाँटते ही नहीं हैं न! हम कहाँ डाँटें और किसे डाँटें? आप तो शुद्धात्मा हो, आपको तो हम नहीं डाँट सकते इसलिए आपको ही चंदूभाई को डाँटना पड़ेगा ताकि हमें न डाँटना पड़े।

प्रश्नकर्ता : डाँटने का मन क्यों नहीं होता? और कोई व्यक्ति भूल करे तो उसे अच्छी तरह से डाँट देते हैं।

दादाश्री : ऐसा तो पता ही नहीं है न, जानेंगे तो डाँटेंगे। दूसरे को जैसा करते देखेगा वैसा ही करता है। वह व्यक्ति तो आँखें निकाल निकालकर कह रहा था, वह रो उठा।

प्रश्नकर्ता : यह डाँटने का प्रयोग बहुत बढ़िया है।

दादाश्री : बहुत नहीं डाँटना है। हम से पूछकर डाँटना चाहिए। सभी को डाँटने की ज़रूरत नहीं पड़ती। इसके जैसे को ही ज़रूरत पड़ती है। इसकी इच्छा दृढ़ है न! अत: सभी दोषों के आरपार निकल सकता है। ये सब दोष निकल जाएँगे, रास्ता मिल जाएगा।

डाँटने वाला डाँटता रहता है और रोने वाला रोता रहता है। बहुत बड़ा आश्चर्य है न! फिर मैंने दूसरे लोगों से कहा है कि 'इस तरह से मत डाँटना। मुझसे पूछे बिना कोई भी डाँटने मत जाना। हमारी आज्ञा देने पर ही ऐसा करना है क्योंकि यह तो जोखिम है। ये आदमी पैंसठ साल के वकील और उन्हें डाँटने जाएँ तो कैसे-कैसे दावे कर देंगे, वह कहा नहीं जा सकता न?

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी वे भाई आए थे न, वे कह रहे थे कि उनकी फाइल नंबर वन इतनी ज़्यादा डर गई है न कि अब, कुछ उल्टा करती ही नहीं है।

दादाश्री : हाँ, वह तो डर ही जाएगी न! उसे डाँटने वाला कोई मिला ही नहीं था और जो डाँटने जाए उसी पर दावा करती है, क्लेम करती है। यदि ज्ञानीपुरुष ज़ोर से डाँटें न तो यहाँ से खुद का हित छोड़कर भी चला जाए। अत: यदि खुद ही अपने आप को डाँटे, तब फिर वह कहाँ जाएगा?

प्रश्नकर्ता : दादा, इन सब बड़े लोगों में ऐसा ही होता है। उन्हें कोई डाँटने वाला नहीं है। कोई कहने वाला नहीं है।

दादाश्री : कोई कहने वाला नहीं है, यह बात सही है। यानी कोई कहने वाला होना चाहिए सिर पर। जिस तरह से उसने डाँटा तो सभी स्तब्ध रह गए और जब फाइल रो उठी, तब कहने लगा, 'रोकर *त्रागा* (अपनी मनमानी) कर रहा है? तू क्या समझता है?' तो जैसे आत्मा बिल्कुल अलग ही हो गया। अब, ऐसा प्रयोग तो और कहीं नहीं होता है। क्या ऐसा प्रयोग कहीं

पर है? थप्पड़ भी मार देते हैं! ऐसे खुद के गाल पर थप्पड़ लगा दी!

प्रश्नकर्ता : दादा, चंदूभाई को दर्पण के सामने खड़ा रखकर अच्छी तरह से मारना चाहिए तो इसे ठीक से पता चलेगा।

दादाश्री : नहीं, वह सब आपके लिए हैं। इन सब के लिए तो स्थूल की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता दादा, ज़रूरत पड़ती है। बहुत बार ऐसी ज़रूरत पड़ती है।

दादाश्री : ठीक है लेकिन फाइल को रास्ते पर ला दिया है। पहले सुनती ही नहीं थी। मुझसे कहने लगा, 'दादा, फाइल सुनती ही नहीं है।' मैंने कहा, 'क्यों नहीं सुनती? जा, मेरा नाम लेकर अच्छे से डाँट।' दादा के कहे अनुसार चलना है। 'तू कौन है भाई? अब तो तेरा सब कुछ ठीक कर दूँगा।' उसके बाद बहुत डाँटा।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा कुछ करना हो तो पहले अगर आपके पास आकर करें तो उससे ठीक से फायदा, लाभ होगा न?

दादाश्री : उसके लिए आशीर्वाद देंगे। फिर आपको क्या है? क्योंकि जब मैं आशीर्वाद देता हूँ न, तब सिर्फ, आत्मा ही होता है इसलिए सिर्फ प्रज्ञाशक्ति ही काम करेगी। ठपका-सामायिक हमारी आज्ञा लेकर ही करनी है, तभी प्रज्ञा हाज़िर रहेगी। वर्ना अगर कुछ और चिपक गया तो हालत खस्ता हो जाएगी।

आज का पुरुषार्थ विरोध पक्ष के साथ न रहना

सच्चा सुख प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है तो वह किस तरह से? सच्चा सुख आत्मा का सुख है अर्थात् आत्मा रूप बन जाना चाहिए। जब आप चंदूभाई को डाँटोगे उस समय कैसा सुख मिलेगा? वास्तव में सुख मिलेगा? चंदूभाई को कहोगे, उन्हें डाँटोगे उस समय बहुत सुख मिलेगा। अब, इसमें आत्मा नहीं डाँटता है, प्रज्ञा नामक शक्ति डाँटती है।

जब डाँटते हैं तब विरोधपक्ष वाले अलग हो जाते हैं। यह तो विरोधपक्ष के साथ बैठना है और सरकार को बदनाम करना है। विरोधपक्ष के साथ बैठे, वह पूर्व कर्म के कारण है लेकिन विरोधपक्ष के अभिप्राय में रहना या नहीं रहना, वह आज का पुरुषार्थ है। अत: आपको सरकार को(आत्मा को) ही अभिप्राय देना चाहिए। विरोधपक्ष में बैठकर भी सरकार को मत (वोट) दे, तब समझना कि अब आत्मा की तरफ मुड़ा। आत्मपक्ष में रहो, भले ही बैठे हो सामने वाले के पक्ष में। वह पूर्व कर्म के अधीन है।

'कहने वाला कौन है? किसे कह रहा है?' जो यह जानता है, वह संपूर्ण शुद्धात्मा है। कौन कह रहा है? प्रज्ञा समिति। किसे कह रहा है? अज्ञा समिति को। अज्ञा समिति में हैं अहंकार, क्रोध-मान-माया-लोभ। वह समिति अलग, यह समिति अलग। एक ही घंटे-गुंठाणे में चंदूभाई को इस तरह डाँटा जाए तो बोलो, उसकी शक्ति कितनी बढ़ जाएगी!

प्रकृति के विरोध में कीमती प्रयोग

प्रश्नकर्ता : हर एक को खुद की फाइल देखकर करना चाहिए। हर एक की फाइल को अलग-अलग दवाई माफिक आती है। एक सी दवाई माफिक नहीं आती। मेरी फाइल को डाँटने के लिए ऐसी कड़ी दवाई माफिक नहीं आती।

दादाश्री : हाँ, किसी को प्रेशर बढ़ जाता है, किसी को कुछ ऐसा हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो ये सब एक-दूसरे का देख-देखकर करने जाते हैं।

दादाश्री : नहीं! देख-देखकर मत करना। 'मुझसे पूछना।' ऐसा मैंने कहा है। अरे, कोई अपने आप मत करना। 'गेट-आउट, गेट-आउट' कहोगे तो ब्लड प्रेशर बढ़ जाएगा। इसलिए तुम्हें तो दर्पण में देखकर कहना है कि 'भाई, मैं हूँ तेरे साथ। तू घबराना मत।' उससे प्रेशर नहीं बढ़ेगा। निश्चय चाहिए इसमें, निश्चय।

प्रश्नकर्ता : आप जो प्रयोग बताते हैं न, दर्पण में सामायिक करने का फिर प्रकृति के साथ बातचीत करना, वे सभी प्रयोग बहुत अच्छे लगते हैं। दो-तीन दिन अच्छे से होता है, उसके बाद उसमें कमी आ जाती है।

दादाश्री : कमी आ जाए तो फिर वापस नए सिरे से करना। पुराना हो जाए तो कमी आ ही जाती है। *पुद्गल* का स्वभाव है कि पुराना हो जाए तो बिगड़ता जाता है फिर वापस नई सेटिंग करके रख देनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् उस प्रयोग द्वारा ही कार्य सिद्ध हो जाना चाहिए। ऐसा नहीं होता है और बीच में ही बंद हो जाता है प्रयोग।

दादाश्री : ऐसा करते-करते सिद्ध होगा, एकदम से नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : वह प्रयोग अधूरा हो और फिर दूसरा प्रयोग करते हैं। वह अधूरा छोड़ देते हैं। कोई तीसरा प्रयोग बताया। वह भी अधूरा! मतलब सभी अधूरे रहते हैं।

दादाश्री : वह वापस पूरा कर लेना, धीरे-धीरे एक-एक को लेकर। दर्पण का प्रयोग पूरी तरह से नहीं किया?

प्रश्नकर्ता : नहीं! जब भी करते हैं, उतना लाभ होता है लेकिन उसके बाद जुदापन रहना ही चाहिए, इन भाई को जैसा अलग देखता हूँ, वैसा परमानेन्ट फिर नहीं देख पाता। प्रकृति को जानते ज़रूर हैं कि अलग है।

दादाश्री : कितना डाँटा था उसने, रोना आ गया तब तक डाँटता रहा। तो बोलो, अब कितना अलग हो गया! तूने डाँटा है, ऐसा कभी? रो दिया हो वैसे?

प्रश्नकर्ता : रोया नहीं था लेकिन ढीला पड़ गया था।

दादाश्री : ढीला पड़ गया था। तू डाँटता है तो सीधा हो जाता है क्या! तो फिर वह प्रयोग कितना कीमती प्रयोग है। लोगों को आता नहीं है। देखो न, यह भाई बैठा रहता है घर पर लेकिन ऐसा प्रयोग नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : हम भी बैठे रहते हैं तो इसमें कमी है या फिर प्रयोग का महत्त्व नहीं समझे? इसमें हकीकत क्या है?

दादाश्री : उतना उल्लास कम है।

क्या दादा से मिलने के बाद कोई कमी रखनी चाहिए?

प्रश्नकर्ता : दादा, जब हमें खराब विचार आते हैं तब बहुत अपसेट हो जाते हैं।

दादाश्री : ऐसा कहना, 'मेरा नहीं है', क्योंकि आप शुद्धात्मा हो। जितना आपका है, उतना ही आपका कहा जाएगा। अन्य सब के आप मालिक नहीं हो। बाकी सब तो आपने मुझे अर्पण कर दिया है इसलिए 'मेरा नहीं है' ऐसा कहने से छूट जाएगा। करके देखो न!

प्रश्नकर्ता : दादा, जब हमें ऐसे खराब विचार आएँ, क्या तब अरीसा-सामायिक करनी है?

दादाश्री : वह तो कुछ परेशानी आ जाए न... रात में ओढ़ने का नहीं हो और पूरी रात

बितानी हो तो अरीसे (दर्पण) में देखकर कहना कि, 'मैं साथ में हूँ न, सो जाओ आराम से।' कोई परेशानी आए तो पीठ थपथपाकर दर्पण में देखकर कहना। और दर्पण में देखकर नहीं लेकिन यों ही कह सकते हो कि, 'भाई, क्यों आए हो यहाँ? क्या लेना-देना है? आपका और हमारा संबंध तो उस दिन था, आज ऐसा कुछ संबंध नहीं है। जब से हमें दादा मिले तब से संबंध छूट गया है।' जब से दादा मिले तभी से संबंध खत्म हो गया है न! ऐसा नहीं कह सकते?

प्रश्नकर्ता : कह सकते हैं।

दादाश्री : दादा मिले हैं तो कोई फायदा उठा लेना है या सब यों ही?

प्रश्नकर्ता : नहीं! उठा लूँगा।

दादाश्री : कमी रहने दोगे क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं!

दर्पण में मन से बातचीत

प्रश्नकर्ता : यदि उल्टा विचार आए तो तुरंत कहता हूँ कि यह ठीक नहीं है लेकिन उसे डाँटता नहीं हूँ।

दादाश्री : दो-चार बार डाँट लेना चाहिए। अभी तो कम उम्र है इसलिए सब ठीक हो जाएगा। फिर बाद में तो मुश्किल होगी।

अब हम शुद्धात्मा बन गए हैं इसलिए मन के साथ लेना-देना ही नहीं रहा। मन का कुछ भी नहीं मानना है। मन ज्ञेय है और हम ज्ञाता। ज्ञेय-ज्ञाता का संबंध क्या है? ज्ञेय को जानना और देखना है। वह कुछ उल्टा सीधा सोचे या गलत सोचे तब भी उसे देखना है और अच्छा सोचे तब भी उसे देखना है। अब हमें उसके साथ लेना-देना ही नहीं रहा। अभी तक उसके साथ ही तेरा लेना-देना था इसीलिए यह भ्रांति थी। अब उसके साथ किसी प्रकार का लेना-देना नहीं है। अगर चंदू सोचे तो सोचे। चंदू क्या सोच रहा है वह हमें देखना है। हमें लेना-देना नहीं है। चंदू को थोड़ा डिप्रेशन आए तो कहना कि, 'भाई, हम हैं न आपके साथ, आप क्यों घबराते हो।' दर्पण में देखकर ऐसा कहना। हम चंदू से अलग हो गए, पड़ोसी के तरह।

अब इसमें तन्मयाकार नहीं होना है। अज्ञान दशा में तन्मयाकार होते थे। यानी कि इस ज्ञान की मुख्य चीज़ यह है कि वह इसमें कमज़ोर नहीं पड़ेगा। विज्ञान है न! इसमें भूल-चूक नहीं होनी चाहिए। खास तौर पर मन से भूल नहीं हो, ऐसा करना। बाकी जो कुछ भी हुआ होगा, उसे फिर सुधार दूँगा।

प्रश्नकर्ता : मन से बातचीत करने का प्रयोग, किस तरह से करना है?

दादाश्री : वह तो दर्पण में देखकर बात करने से हो जाएगा! मन से कहना कि 'हम तुझ में दखलंदाज़ी नहीं करेंगे, तू हम में दखलंदाज़ी मत करना।' फिर अगर कभी मन कहे कि 'हम में क्यों दखलंदाज़ी कर रहे हो?' तब हमें कहना है, 'अब हम तेरी बात में दखल नहीं करेंगे और तू मेरे काम में दखल मत करना।' कितने भागीदारों के तूफान हैं ये सब तो! लेकिन शुद्धात्मा हाथ में आ गया और पाँच वाक्य (आज्ञाएँ) तो समझो हो गया।

डिप्रेशन के समय चंदू को आश्वासन देना

आपको तो इन सभी को देखते ही रहना है कि चंदूभाई का मन क्या कर रहा है बुद्धि क्या कर रही है, चित्त क्या कर रहा है। अगर कभी डिप्रेशन में आ जाए, जब चंदूभाई के कुछ ऐसे संयोग आएँ, उदय कर्म ऐसे हों तब सिर्फ ऐसा

कहना है कि, 'आओ, आओ! आप दर्पण के पास आओ।' अलमारी का दर्पण लंबा होता है न, वहाँ ले जाओ और फिर चंदूभाई का कंधा ज़रा इस तरह से थपथपाओ कि 'हम हैं न, आपके साथ, घबराना नहीं' तो वे शांत हो जाएँगे। कंधा थपथपाने वाला कोई मिला ही नहीं। आप इस प्रकार से करना इसमें हर्ज नहीं है। यदि कभी ऐसा हो जाए तो कंधा थपथपाकर कहना कि, 'चंदूभाई मैं हूँ न।' मैं अर्थात् शुद्धात्मा। शुद्धात्मा अर्थात् भगवान। तब फिर बिल्कुल करेक्ट हो जाएगा। डिप्रेशन खत्म हो जाएगा। अत: जब ऐसा हो तब उस तरह से करना। जब अड़चन हो तब।

जब लोगों को ज्ञान नहीं हो तब अगर घर में पति से कहे कि, 'देखो न, ऐसा सब हो गया।' तब पति क्या कंधा थपथपाएगा? क्या करेगा? 'तुझ में अक्ल है?' कहेगा। लो! एक तो डिप्रेशन और फिर ऊपर से एक चाँटा मारता है... और यदि पति को दो-पाँच लाख का नुकसान हो जाए और घर में आकर कहे कि, 'तुम ज़रा सीधी नहीं चलती। अभी मेरी क्या दशा है वह नहीं समझती।' तब पत्नी कहेगी, 'भगवान नहीं रूठे हैं। आप ही ऐसे हो। आप में काबिलियत ही नहीं है' बोलो, कोई आश्वासन देता है क्या? नहीं देता। तो हमें खुद ही देना है। यह बात आपको समझ में आती है क्या? ये सारी बातें वैज्ञानिक हैं। वैज्ञानिक अर्थात् अनुभव की बातें हैं।

संयोगों के दबाव के समय करो यह प्रयोग

प्रश्नकर्ता : इस काल का दबाव या संयोगों का दबाव है लेकिन अकुलाहट बहुत हो जाती है। इतनी ज़्यादा हो जाती है कि समझ में नहीं आता कि क्या करें?

दादाश्री : जो भी अकुलाहट है वह तो चंदू को है न! आपको क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, चंदू को अकुलाहट होती है लेकिन ऐसा है कि चंदू जागृति ले जाता है।

दादाश्री : उस समय आप दर्पण में देखकर कंधा थपथपाना तो अकुलाहट बंद हो जाएगी। 'मैं हूँ न, ऐसा क्यों कर रहे हो?' तो अकुलाहट बंद। रास्ते तो मैंने सभी बताए हैं।

प्रश्नकर्ता : बताए तो हैं लेकिन क्या पता पिछले कर्म ऐसे होंगे कि बार-बार आकर इस तरह झटके मार जाते हैं। दादा, कई बार मुझे क्रोध-मोह-माया-लोभ हो जाते हैं। अकुलाहट से भी ज़्यादा हो जाते हैं।

दादाश्री : हाँ! क्रोध-मान-माया-लोभ कब कहा जाता है? जब उसमें खुद एकाकार हो जाए तब! लेकिन अब, आपको वह अच्छा नहीं लगता इसलिए वे क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं कहे जाएँगे। वे तो सिर्फ पौद्गलिक गुण बचे हैं, उनका *निकाल* हो जाएगा। उसमें हर्ज नहीं है। ये सभी निकाली बाते हैं।

अब, आपमें क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं बचा। आपमें किसी भी प्रकार का कुछ नहीं रहा। आप संपूर्ण रूप से शुद्धात्मा बन गए हो। अब, मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार सब कुछ चंदू का है। आपको कुछ लेना-देना नहीं है। वह मन में *कढापा* (क्लेश) करे या *अजंपा* (बैचेनी) करे, आपको सब देखते रहना है। दर्पण में चेहरा देखकर आपको तुरंत ही कहना है कि, 'हम हैं न, आपके साथ,' इतना ही कह देना है। हम गारन्टी देते हैं कि महावीर जैसी समाधि रहेगी। बेटे-बेटियों की शादी करते हुए, सिनेमा देखने जाते समय भी महावीर जैसी समाधि रहेगी। यह तो अक्रम विज्ञान है, चौबीस तीर्थंकरों का सम्मिलित विज्ञान है, यह! ग्यारहवाँ आश्चर्य है, इलेवन्थ वन्डर!

सौ प्रतिशत जुदापन का अनुभव

प्रश्नकर्ता : जब अकेले बैठे हों, शाम को बैठे हों तो चंदूभाई को देखते रहना है कि...

दादाश्री : चंदूभाई को देखना है कि उनका मन क्या रहा है, उनकी बुद्धि क्या कर रही है, अहंकार क्या कर रहा है, यह देखते रहना है और जब सब शांत हो तब चंदूभाई अलग दिखाई देंगे, उन्हें देखते रहना है। दर्पण में चेहरा देखोगे न तो चंदूभाई दिखाई देंगे। उन्हें देखते रहना है। फिर हम ऐसा भी कह सकते हैं कि, 'चंदूभाई, आप तो बहुत अच्छे हो। बहुत समझदार दिखाई देते हो!' ऐसा सब हम कह सकते हैं। हम उसके साथ बातें करेंगे ताकि ऐसा अनुभव हो कि सौ प्रतिशत अलगपन है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि हमें पूरे दिन के अंत में बैठकर चंदूभाई को देखकर और याद करके ऐसा कहना है कि, 'आज सुबह तूने ऐसा किया था। आज दोपहर को गुस्सा किया था।'

दादाश्री : हाँ, ऐसा सब कहना है।

प्रश्नकर्ता : उसी को 'देखना' कहेंगे न? प्रकृति को 'देखना' कहा जाएगा न?

दादाश्री : हाँ, 'देखने' के बाद हमें कहना भी है कि 'ऐसा जो किया है वह शोभा नहीं देता। अब तो उम्र हो गई है। अब मोक्ष में जाना है न?'

प्रश्नकर्ता : हाँ। यानी अगर गुस्सा हो जाए तो फिर हमें उसे डाँटना है कि, 'यह आप क्या कर रहे हो? दादा के मिलने के बाद भी अभी गुस्सा करते हो? शोभा नहीं देता।'

दादाश्री : हाँ, बस। 'यह आपको शोभा नहीं देता।' हाँ, इस तरह डाँट सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : इसे 'देखना' कहा जाएगा न?

दादाश्री : हाँ, उसे 'देखना', कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : उसे अनुभव कहेंगे?

दादाश्री : हाँ, उसे अनुभव कहेंगे। आप थोड़ा बहुत कह सकते हो कि, 'अब आपकी उम्र हो गई है। अब ज़रा ऐसा सोचो। सास यहाँ नहीं है इसलिए रौब जमा रही हो!' ऐसा कहना चाहिए। सास डाँटतीं तो क्या करती? 'कोई कहने वाला नहीं है इसलिए आप ऐसा कर रही हो' जितना कहा जा सके उतना कहना। इसमें क्या कोई इज़्ज़त चली जाएगी? इज़्ज़त तो गई हुई ही है न! इज़्ज़त गई इसीलिए तो ये दादा मिले। इज़्ज़तदार लोग तो देखो कैसे घूमते हैं! उन लोगों को अंदर ही अंदर चिंता करनी है लेकिन बाहर इज़्ज़त रखनी है कि बाहर इज़्ज़त नहीं गँवाएँगे।

हम हैं आपके साथ

आपको चिंता वरीज़ नहीं होती क्योंकि आप अलग हो और ये अलग। अब चंदूभाई को कोई दु:ख आए तो हमें कहना है कि, 'हम हैं आपके साथ। घबराना मत' और वह भी दर्पण के सामने देखकर कहना है।

तो वह बिल्कुल शांत हो जाएगा। अब किसी भी परेशानी का असर नहीं होगा। एक भी वरीज़ (चिंता) नहीं होगी। निरंतर समाधि ही रहेगी। यदि इस ज्ञान को एक्ज़ेक्टली (ठीक से) पकड़ ले, हमारे कहे अनुसार, हमारे व्यू पोइन्ट से तो चाहे कैसी भी परेशानी हो लेकिन उसमें समाधि रहेगी क्योंकि यह वैज्ञानिक है! यह पूरा विज्ञान ही है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह दर्पण की बात तो आपने बहुत ग़ज़ब की बताई है। उसे दर्पण के सामने देखकर कहना है, उससे तो...

दादाश्री : उससे सब घाव भर जाएँगे। इस

तरह दर्पण के सामने देखकर जब कंधा थपथपाएँगे कि, 'हम हैं न आपके साथ,' तो तुरंत ही घाव भर जाएँगे।

हम शुद्धात्मा बन गए हैं और शुद्धात्मा का मतलब क्या है? खुद दादा ही! तो अब कहना कि, 'हम आपके साथ में ही हैं' तो सब (चिंता) खत्म हो जाएगी। बाकी कुछ भी नहीं है। इसी तरह करके दिन निकालने हैं। हमें वीतरागता रखनी है। और रहेगी, असल में वीतरागता रहेगी क्योंकि यह दरअसल वीतराग विज्ञान है और सैद्धांतिक है। यह बुद्धि की बिल्कुल भी नहीं सुनता।

हमें पड़ोसी धर्म निभाना है

'अपना' 'पड़ोसी' चेतनभाव सहित है। 'चार्ज' हो चुका है इसलिए उसके सभी भाव, बुद्धि के सभी भाव, अपमान करे तब मन उछलता है, वे सब पड़ोसी के भाव हैं। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार सभी जब उछलकूद मचाएँ तो 'आप' चंदूभाई को धीरे-से कहना, 'उछलना मत भाई, अब शांति रखना।' यानी कि आपको पड़ोसी की तरह पड़ोसी धर्म निभाना है। किसी समय बहुत उत्तेजित हो जाए तो आप दर्पण के सामने देखना। तो इस तरह दर्पण में चंदूभाई दिखेंगे न! फिर चंदूभाई पर ऐसे हाथ फेरना। यहाँ पर आप फेरोगे तब वहाँ पर दर्पण में भी फिरेगा। ऐसा दिखेगा न? फिर आपको चंदूभाई से कहना है कि, ''शांति रखो। 'हम' बैठे हैं। अब आपको क्या भय है?'' इस तरह अभ्यास करो। दर्पण के सामने बैठकर आप अलग और चंदूभाई अलग। दोनों अलग ही हैं।

दादा का जुदापन का व्यवहार

प्रश्नकर्ता : दादा, आप अपने पड़ोसी को किस तरह से देखते हैं?

दादाश्री : अच्छी तरह से। बहुत अच्छे इंसान हैं, यह मैं बचपन से ही जानता हूँ! यों अच्छे इंसान हैं, बहुत अच्छे इंसान हैं। कोई दखलंदाज़ी नहीं, कोई झंझट नहीं, कुछ भी नहीं चाहिए, कोई परेशानी नहीं। ज़ल्दी उठाओ तो भी हर्ज नहीं, देर से उठाओ तो भी हर्ज नहीं। 'नीचे महात्मा आए हैं,' ऐसा कहते ही उठकर आधे घंटे में नीचे पहुँच जाते हैं।' क्या तुझे ऐसा लगा कि हमें कोई परेशान कर रहा होगा? नहीं। अरे! हमें तो परेशान नहीं करते हैं लेकिन हीरा बा को भी कभी परेशान नहीं करते!

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार आत्मा और *पुद्गल* का डिमार्केशन है न, जिस तरह से आपको अलग लगते हैं उसी तरह से हमें आत्मा किस तरह से अलग महसूस होगा?

दादाश्री : अलग ही है न!

प्रश्नकर्ता : है लेकिन जिस प्रकार से आप देख सकते हैं कि आत्मा अलग है और *पुद्गल* अलग है, उस तरह से हम भी देख सकते हैं क्या?

दादाश्री : जब वह स्टेशन आएगा तब दिखाई देगा न!

प्रश्नकर्ता : तो वह किस प्रकार का होता है?

दादाश्री : उसका कोई तरीका नहीं होता। यह आत्मा और यह *पुद्गल*। ये दोनों एक दूसरे से लगकर ही हैं लेकिन ये दोनों संग में नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : अभी आप ये जो बैठे हैं और दादा भगवान 'दादा' को देख रहे हैं, वे किस प्रकार से देखते हैं?

दादाश्री : 'स्व-पर' दृष्टि से। 'स्व' की दृष्टि और 'पर' की दृष्टि से। मैंने आपको जो

आत्मा दिया है उसकी दृष्टि अलग है और यह दृष्टि अलग है। यह जो रूम दिखाई देता है न, यह सारी दृष्टि अलग है, इसे 'पर' की दृष्टि कहते हैं और वह 'स्व' की दृष्टि है। 'स्व' दृष्टि अलग है। 'स्व' और 'पर' दोनों अलग दिखाई देते हैं। यह 'पर' और यह 'स्व'। आप भी समझते हो न लेकिन आपको गहराई में उतरने की ज़रूरत नहीं है लेकिन हमें तो समझ में आता है न कि भाई, यह सब अलग है। क्या आपको पता नहीं चलता कि यह 'पर' है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो पता चलता है।

दादाश्री : वही दृष्टि है। 'यह मैं नहीं हूँ और मैं यह हूँ, यह नहीं हूँ और यह हूँ।' अत: इसी को मज़बूत कर लो! अगर ये सभी रोड कच्चे रहें और फिर आगे रोड बना देंगे तो वह कच्चा रह जाएगा। यह रोड मज़बूत है और जहाँ तक वह दिखाई दे, वहाँ तक उसे मज़बूत हो जाने दो अच्छी तरह से। यह सब तो नियम से ही काम करता है। आपको इन सभी झंझटों में नहीं पड़ना है। वर्ना, जैसा यहाँ पर था, वैसा ही दखल वाला बन जाएगा। वहाँ दखल की ज़रूरत ही नहीं है। आप तो आज्ञा में रहो। आज्ञा से बाहर निकलना भयंकर गुनाह है। यह तो, जो पुरानी आदतें पड़ी हुई हैं न, वे हेबिट अभी परेशान करती हैं। बाकी, पाँच आज्ञा का ही पालन करना है और किसी दखल में उतरना ही नहीं है। आपको पता चलता है न कि यह पराया है, यह स्व नहीं है?

प्रश्नकर्ता : हाँ। दादा, वह तो पता चल जाता है।

दादाश्री : दुनिया में कोई लोग यह नहीं समझ सकते।

आपको चंदू को शिष्य बनाना है

लोग आपको कब पहचानेंगे? अगर आपका व्यवहार अच्छा होगा तब। आप शुद्धात्मा बन गए हो ऐसा कब पहचानेंगे? अभी तो सब ऐसा ही समझते हैं न कि 'ये चंदूभाई हैं?' और आप ऐसा समझते हो कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' आपका ज्ञान अलग और लोग जो जानते हैं, वह ज्ञान अलग है। क्या अलग नहीं है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : लोगों को ऐसी खबर नहीं है न कि ये शुद्धात्मा बन गए हैं। ऐसा कब कहा जाएगा कि आप शुद्धात्मा बन गए हो? जब बाहर का व्यवहार बदल जाएगा, तब लोग समझ जाएँगे। यानी कि लोग अभी यह नहीं जानते हैं। जब जानेंगे तब की बात अलग है।

अभी कोई आपका शिष्य बनेगा क्या? नहीं। क्यों? उल्टा-सुल्टा बोल देते हो और लोग बाकी का व्यवहार भी देखते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, व्यवहार देखते हैं।

दादाश्री : लोग तो, जब उन्हें अनुभव हो, उनके लिए कुछ कर दें और उन्हें आनंद हो तो वे शिष्य बनते हैं। आप अगर ज्ञान की बात समझाने जाओ फिर भी वे ऐसा समझेंगे कि ये दादा की बातें बता रहे हैं। जब हम शुद्धात्मा स्वरूप में रहकर बोलेंगे और आनंद होगा तब वैसे ही बन जाओगे लेकिन तब तक तो आपका कोई शिष्य नहीं है न, तो आपको सब से पहला शिष्य चंदूभाई को बनाना है। नहीं समझें?

यानी कि 'आपको' एक ज़बरदस्त अच्छा शिष्य चंदूभाई तो मिल ही गया है। उससे कहना, 'अरे! ऐसा कर, वैसा कर'। सावधान करना, समझाना, भूलें दिखाना, प्रतिक्रमण करवाना। बल्कि वह ठीक से हो पाएगा। मैं कहूँ फिर भी मेरा कहा कितने लोग सुनेंगे? लेकिन अगर आप कहोगे तो चंदूभाई सुनेंगे।

खुद को खुद का ही शिष्य बनना पड़ेगा। इस चंदूभाई को आपका शिष्य बनाना है। कोई और शिष्य बनेगा? कोई क्या चंदूभाई का शिष्य बनेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं बनेगा, दादा। आपकी बात बहुत बढ़िया है!

भीतर का कचरा शुद्ध करवाओ चंदू से

दादाश्री : मैं कुछ भी बताने नहीं आऊँगा। आपको ही बताना है। अब मुझे फिर से नहीं कहना पड़ेगा न? अब मुझे कहने नहीं आना पड़े! आपको ही कहना है, 'चंदूभाई ऐसा करो, वैसा करो।' यह कचरा आपको रेग्युलर (नियमित) नहीं रहने देगा। अगर घर में कचरा है तो हमें 'उसे' कह देना है कि, 'चंदूभाई देखो, अभी भी कचरा है।' तब चंदूभाई कहेंगे, 'आपके शुद्ध होने से मुझे क्या फायदा?' तब आप कहना, 'हम शुद्ध हो जाएँगे तो तेरा भी ठिकाना पड़ ही जाएगा, यह पक्की बात है। उसकी गारन्टी है।'

प्रश्नकर्ता : शुद्ध तो हमें चंदूभाई को ही करना है न?

दादाश्री : हाँ। 'हम' तो शुद्ध हैं ही। हम शुद्धात्मा ही हैं। अब चंदूभाई क्या कहते हैं कि 'मैं भी शुद्ध हो गया हूँ।' तब कहना, 'नहीं! बाहर से सब धुल गया है लेकिन अभी तो अंदर बहुत कचरा पड़ा हुआ है, उसे साफ करोगे तो शुद्ध हो जाओगे।' बर्तन धो दिए हैं। जैसे-तैसे धोए है इसलिए कहीं-कहीं ज़रा मिट्टी दिखाई दे रही है। तब वह कहेगा 'ये तो गीले हैं।' 'धो दो, और अच्छी तरह से धो दो।'

पूरे दिन आपको सिर्फ इसी में जान (जागृति) रखनी है कि, 'चंदूभाई क्या कर रहे हैं?' आपको चंदूभाई से कहते रहना है। चंदूभाई क्या कर रहे हैं, वह 'देखना' है और यदि वे न करें तो आपको उनसे कहना है, 'अभी भी ये बर्तन रह गए हैं, अभी भी यह फलाना रह गया है।' एक काम पूरा करते ही तुरंत दूसरा बता देना है। यानी कि आपको चंदूभाई की भूलें दिखाई देगी और आपको चंदूभाई से कहना है कि, 'ऐसी भूल कर रहे हो लेकिन अब सुधार लो।' तो वह सीधा हो जाएगा वर्ना, सीधा नहीं होगा।

पहले देखो और फिर दर्पण में जानो

प्रश्नकर्ता : आपने आप्तवाणी में कहा है कि 'आप जानते हो लेकिन देखते नहीं हो,' वह क्या है?

दादाश्री : चंदूभाई, क्या कर रहे हैं, चाय पी, खाया-पीया, यह सब देखो। यह तो सिर्फ जानता रहता है, देखता नहीं है न! *पुद्‌गल* को निरंतर देखते ही रहना चाहिए। पहला फर्ज़ यही है, जानने का फर्ज़ बाद में हैं।

प्रश्नकर्ता : यह देखना। वह किस तरह से?

दादाश्री : यह क्या कर रहा है ऐसा नहीं दिखेगा भला? ये चंदूभाई पूरे दिन क्या करते हैं, वह मुझे दिखाई देता है। वैसा ही 'आपको' भी दिखना चाहिए। बस, इतना ही। वैसा ही, कोई नई डिज़ाइन या कुछ भी नहीं कि उसमें अंदर आर्किटेक्चर को लाने की ज़रूरत नहीं है। जैसा मुझे दिखाई देता है वैसा ही आपको दिखाई देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपने एक बार बात भी की थी कि चंदूभाई खाना खा रहे हों तो जैसा दर्पण में दिखाई देता है, उसी तरह से दिखाई देना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, यानी कि वैसा ही दिखाई देना चाहिए। वह दर्पण को दिखे या मुझे दिखे, सब एक समान ही है न! वैसा ही दिखाई देना चाहिए। क्या वह मुश्किल है?

प्रश्नकर्ता : दादा, वह आपके लिए आसान है लेकिन हमारे लिए तो मुश्किल ही है न।

दादाश्री : नहीं। लेकिन वह धीरे-धीरे फिट कर लेना है, फिर अपने आप ही फिट हो जाएगा। उस तरफ दृष्टि नहीं जाएगी तो फिर वह फिट किस तरह से होगा? महावीर भगवान तो एक ही कार्य करते थे कि महावीर क्या कर रहे हैं उसे देखते रहते थे, बस। बाकी किसी झंझट में थे ही नहीं। महावीर जब जग रहे होते तब उन्हें जागृत अवस्था में देखते थे, मैं देख रहा हूँ उस तरह से। जैसे मैं देख रहा होऊँ न, उस तरह से 'आपको' देखना है। कोई जागृत और समझदार व्यक्ति देखता ही रहता है, अपना पूरा निरीक्षण करता रहता है। उस प्रकार से 'आपको' निरीक्षण करना है, इतना ही है न! दूसरों का करने की शक्ति तो सभी लोगों में हैं लेकिन यह तो खुद का निरीक्षण करने की शक्ति! क्योंकि अनादि से अभ्यास नहीं है न, इसलिए वहाँ पर कच्चा पड़ जाता है।

दर्पण में देखकर आसान कर देते हैं। ऐसा करते-करते प्रेक्टिस हो जाएगी क्योंकि 'अनादि काल से इस तरह से देखा ही नहीं है न! क्योंकि 'यह मैं खुद ही हूँ' तो फिर देखने को रहा ही कहाँ!' यह तो खुद जुदा हो चुका है इसलिए देख सकता है। देखने वाला जुदा हो गया!

अत: अंतिम ज्ञाता-दृष्टा तो, चंदूभाई आ-जा रहे हों तो आपको ऐसा दिखे कि 'ओहोहो, आइए चंदूभाई, आइए चंदूभाई।' चंदूभाई बात कर रहे हों तो भी आपको जुदा दिखाई देना चाहिए।

उपयोग में रहने का तरीका

मैं तो, जब नीरू बहन हाज़िर हों, तब भी अपने आपसे बातें करता हूँ। क्या कहता हूँ? 'अंबालाल भाई! क्या आप कॉन्ट्रैक्टर हो? आप कैसे इंसान हो? आप अपने आपको क्या मान बैठे हो?' ऐसा कहता हूँ। नीरू बहन कहती हैं, 'आप बातें कर रहे हो?' तब मैं कहता हूँ, 'नहीं तो क्या करूँ? क्या सभी बातें अकेले में थोड़े ही हो सकती हैं।'

प्रश्नकर्ता : दादा, आप तो निर्भेदी हैं न! यानी कि भेद रहित हैं इसलिए आप अलग रहकर बोल सकते हैं।

दादाश्री : अलग ही है। है ही अलग। मैंने अलग ही कर दिया है, बिल्कुल अलग कर दिया है। अब यदि आप उसका उपयोग नहीं करो तो, आप उसके (फाइल नंबर वन) साथ सटकर बैठे रहो। अत: डाँटने से वह अपने आप ही अलग रहेगा। जैसे कि सास-बहू लड़ते हैं उस तरह से। सास और बहू लड़ते ही हैं न? नहीं? बहू को सास के कितने दोष दिखाई देते हैं बेचारी को? मूलत: तो वह खुद अपने आप से ही लड़ता है, यानी कि सभी दोष देख ही रहा होता है न!

अब आपको रोज़ ऐसे डाँटने नहीं है कि रो पड़े लेकिन यों ही ज़रा रोज़ कहते रहना है। यदि सास किचकिच करने लगे तो बहू समझ जाती है कि 'अब हम इनके साथ नहीं रह पाएँगे।'

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : वह अलग होने का, और अधिक अलग होने का रास्ता है!

बात करने वाला चंदू से अलग ही है

प्रश्नकर्ता : दादा, अपना यह जो बातचीत का प्रयोग है तो जब हम चंदू से बातें करते हैं तब चंदू अलग और खुद अलग तो यह बातचीत करते-करते क्या बातचीत करने वाला स्वरूप के साथ एकाकार हो जाता है?

दादाश्री : बात करने वाला नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : नहीं! यह तो... यानी कि हमें वह भी दिखाई देता है कि यह बात हो रही है। एक, बात करने वाला है और एक वह जिससे बात हो रही है, वे दोनों दिखाई देते हैं। बात करने वाला और जिससे बात हो रही है, खुद तो उन दोनों का प्रकाशक ही रहता है न?

दादाश्री : बात करने वाले को कोई परेशानी नहीं है।

निरंतर उपयोग से एकावतारी मोक्ष

दर्पण में देखकर अभ्यास करते हुए चंदूभाई को देखते रहना है, 'कहना पड़ेगा चंदू! क्या बात है?' अभ्यास हो गया होगा तो अंदर दिखाई देगा अगर अभ्यास ही नहीं हुआ होगा तो फिर कैसे दिखाई देगा? तूने तो किया है न अभ्यास?

प्रश्नकर्ता : अभ्यास से ही उपयोग रह सकता है न?

दादाश्री : इंसान को अभ्यास की ज़रूरत तो है न? अभ्यास यानी खुद जागृति में तैयार रहना।

प्रश्नकर्ता : यह क्या कहा?

दादाश्री : जागृति यों ही बह जाती है। गलत हुआ, गलत हो रहा है लेकिन खुद कोई अभ्यास नहीं करता है। जागृति दिखलाती ही रहती है न कि 'गलत हो रहा है।' तुझे जागृति कुछ दिखलाती है क्या?

प्रश्नकर्ता : ऐसा सब दिखलाती है।

दादाश्री : पूरे दिन? कितने उच्च प्रकार की जागृति है? दुनिया ढूँढ रही है लेकिन ऐसी जागृति नहीं रहती। मैंने आपको ऐसी जागृति दी हुई है कि वह जागृति निरंतर रहे। उस जागृति का उपयोग करना है। ज़रा पहले की आदतें पड़ी हुई हैं न! तो वहाँ चिकनी जगह पर फिसलने की आदत पड़ गई है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही बात है।

दादाश्री : तो वहाँ पर ज़रा जागृति रखना कि 'यह चिकनी जगह है और फिसल सकते हैं' अगर फिर भी उदय में ऐसा आ जाए तो हमें कहना है कि 'चंदूभाई, तू फिसल रहा है और मैं देख रहा हूँ।' क्या इसमें कोई हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : यह तो फिसल ही जाता है, वह खुद भी चंदूभाई के साथ फिसल जाता है। अत: वहाँ पर उपयोग रखना है। जिस तरह कुएँ की तरफ जाने वाला इंसान क्या अपनी पत्नी को याद करता है, बच्चों को याद करता है या कुएँ को याद रखता है? कुएँ पर बैठना पड़े तो सावधान हो जाता है न?

या फिर समुद्र के बीच दो फुट चौड़ा रास्ता हो जिसके दोनों ओर रेलिंग नहीं हो और अगर वहाँ पर किसी को जाना पड़े तो उस समय क्या उसे वाइफ याद आएगी, लक्ष्मी याद आएगी या बंगले याद आएँगे?

प्रश्नकर्ता : कोई भी याद नहीं आएगा।

दादाश्री : हाँ, इसे कहते हैं उपयोग। दादा ने सिद्धांत सहित एक अवतारी मोक्षमार्ग दिया है तो फिर उस सिद्धांत को हमें पकड़े रखना चाहिए। उसी में उपयोग रखना चाहिए। समुद्र में गिरने पर तो एक ही जन्म की मृत्यु होती है, जबकि इससे तो लाखों जन्मों के लिए मृत्यु हो जाएगी। अंदर तो चंदूभाई से कहना चाहिए कि 'सीधे रहो।'

बातचीत के प्रयोग से साधी जा सकती है प्रगति

उपयोग किसे कहते हैं कि जब सौ-सौ

के नोट गिन रहा हो, तब क्या उसका उपयोग वहाँ से किसी अन्य जगह पर जाता है? वह उपयोग कहलाता है। हमारा निरंतर वैसा उपयोग रहता है। हमारी हाज़िरी में रहोगे तो आपको भी उपयोग रहेगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा क्या इसलिए होता है कि इस पद में या किसी और चीज़ में अलग-अलग मात्रा में रुचि रहती है?

दादाश्री : रुचि को पोषण देने की ज़रूरत नहीं है। आपको तो उपयोग रखना है। आपको कह देना है, 'चंदूभाई, दादा के दरबार में बैठे हो। अब यहाँ पर जो-जो चल रहा है उसमें आप उपयोग रखकर चलो।' फिर आपको 'देखते' रहना है, उपयोग चूक जाए तो तुरंत कहना, 'चंदूभाई चूक गए, ऐसा नहीं होना चाहिए।'

प्रगति नहीं करनी है क्या मेरी उपस्थिति में? वर्ना तो इस तरह से कहते ही फाइल नंबर वन से बात करने लगते।

अक्रम ज्ञान से निकाल लो काम

बातचीत करते ही अलग इसलिए इन लोगों से कहा है कि लंबे दर्पण के सामने खड़े रहकर इस तरह से कंधा थपथपाओ, 'कैसे हो? चंदू मज़े में हो न? कोई परेशानी हो तो कहते रहना,' ऐसा सब कहना है। कुछ समय के लिए ही ऐसा करना है फिर वह अलग ही दिखाई देगा। है ही अलग।

यदि ज़्यादा दोष हों तो चंदू को डाँटना है, 'चंदू ऐसा क्यों कर रहे हो? ऐसा नहीं होना चाहिए,' इस तरह से डाँटना है।

आप दर्पण के सामने जाना। दर्पण के सामने जाओगे तो क्या हो जाएगा? उसमें क्या कोई समय लगता है, मेहनत करनी पड़ती है क्या?

प्रश्नकर्ता : मेहनत नहीं करनी पड़ती तुरंत ही दिखाई देता है स्वभाविक रूप से।

दादाश्री : लोगों के लिए इसकी कोई कीमत ही नहीं है। वास्तव में कीमत तो इसी की है। दर्पण के सामने दिखाई देना तो कितना आश्चर्यजनक है?

भरत राजा को, ऋषभदेव भगवान ने 'अक्रम ज्ञान' दिया और अंत में उन्होंने अरीसाभवन (शीशमहल) का आसरा लिया, तब जाकर उनका काम हुआ। अरीसाभवन में अँगूठी निकल गई थी, उँगली को खाली देखी, तब उन्हें हुआ कि सभी उँगलियाँ ऐसी दिखती हैं और यह उँगली क्यों ऐसी दिख रही है? तब पता चला कि अँगूठी निकल गई है, इसलिए। अँगूठी के कारण उँगली कितनी सुंदर दिख रही थी, फिर चला अंदर तूफान! वह ठेठ 'केवलज्ञान' होने तक चला! विचारणा में उतर गए कि अँगूठी के आधार पर उँगली अच्छी दिख रही थी? मेरे कारण नहीं? तो कहा कि, तेरे कारण कैसा? तब फिर 'यह नहीं है मेरा, नहीं है मेरा, नहीं है मेरा' ऐसे करते-करते 'केवलज्ञान' को प्राप्त किया! अर्थात् हमें अरीसाभवन का लाभ लेना चाहिए। अपना 'अक्रम विज्ञान' है। जो कोई इसका लाभ लेगा, वह काम निकाल लेगा, परंतु इसका किसी को पता ही नहीं चलता न? भले ही आत्मा नहीं जानता हो, फिर भी अरीसाभवन की सामायिक ज़बरदस्त हो सकती है।

अक्रम अर्थात् कर्म खपाए बिना यहाँ मोक्ष मार्ग में आ गए हैं और क्रमिक में तो सब खपाकर जाना होता है। वहाँ पर कर्म खपाते-खपाते जबकि यहाँ पर कर्म खपाए बिना इसीलिए ये सारे तरीके अपनाने पड़ते हैं।

– **जय सच्चिदानंद**

प्रत्येक धर्म ने प्ररूपित किया प्रतिक्रमण

भगवान ने कहा है कि, आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान के अलावा अन्य कोई व्यवहार धर्म है ही नहीं। लेकिन यदि वह कैश होगा तो, उधार नहीं चलेगा। किसी को गाली दी, जो अभी हुआ उसे लक्ष्य में रख, किसके साथ क्या हुआ वह, और फिर आलोचना करके, कैश प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान कर। उसे भगवान ने व्यवहार-निश्चय दोनों कहा है। लेकिन वह किससे हो पाएगा? समकित होने के बाद ही हो सकता है। तब तक यदि करना हो फिर भी नहीं होगा। समकित नहीं हुआ और फिर भी कोई अपने यहाँ से आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान सीखकर जाए तो भी काम निकाल लेगा। भले ही संक्षेप में सीख जाए तो भी हर्ज नहीं है। समकित उसके सामने आकर खड़ा रहेगा!!!

जिसके आलोचना-प्रतिक्रमण सच्चे होंगे, उसे आत्मा प्राप्त हुए बगैर रहेगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : पश्चाताप करता हूँ, वह प्रतिक्रमण है और ऐसा कहना कि ऐसा नहीं करूँगा, वह प्रत्याख्यान?

दादाश्री : हाँ। पश्चाताप, वह प्रतिक्रमण कहलाता है। अब प्रतिक्रमण किया लेकिन अब फिर से ऐसा अतिक्रमण नहीं हो, उसके लिए ऐसा कहना कि 'फिर से ऐसा नहीं करूँगा' वह प्रत्याख्यान कहलाता है। फिर से ऐसा नहीं करूँगा, ऐसा प्रोमिस करता हूँ, मन में ऐसा तय करना है और उसके बाद यदि फिर से ऐसा हो जाए तो एक परत तो चली गई थी। लेकिन फिर दूसरी परत आती है, तो उससे घबराना नहीं, बार-बार ऐसा करते ही रहना है।

प्रश्नकर्ता : आलोचना यानी क्या?

दादाश्री : हाँ, आलोचना यानी आपने कोई खराब काम किया हो, तो आपके जो भी गुरु हों, या फिर ज्ञानी हों, उनके सामने इक़रार करना। जैसा हुआ हो वैसे ही स्वरूप में इक़रार करना।

अर्थात् आपको प्रतिक्रमण किसका करना है? तब कहें, 'जितना अतिक्रमण किया हो, जो लोगों को स्वीकार्य नहीं है, जो लोकनिंद्य है ऐसे कर्म, और सामनेवाले को दु:ख हो जाए ऐसा हुआ हो तो वे अतिक्रमण कहलाते हैं। वैसा हुआ हो तो प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत है।'

किसी को कुछ दु:ख हो, यदि ऐसा आचरण करे तो वह अतिक्रमण कहलाता है और अतिक्रमण होने पर प्रतिक्रमण होना ही चाहिए। और वह बारह महीनों में एक बार करते हैं, वैसा नहीं। शूट ऑन साइट (दोष देखते ही खत्म करो) होना चाहिए, तो ये दु:ख कुछ कम होंगे। वीतराग के कहे गए मत के अनुसार चलेंगे तो दु:ख जाएगा वर्ना दु:ख नहीं जाएगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा प्रतिक्रमण कैसे करना चाहिए?

दादाश्री : आपने यदि ज्ञान प्राप्त किया हो तो आपको उसके आत्मा का पता चलेगा। अत: आत्मा को संबोधित करके करना है, नहीं तो भगवान को संबोधित करके करना, 'हे भगवान! पश्चाताप करता हूँ, माफ़ी माँगता हूँ और अब फिर से नहीं करूँगा।' बस यही है प्रतिक्रमण!

प्रश्नकर्ता : इससे धुल जाएगा क्या?

दादाश्री : हाँ, हाँ, बिल्कुल!! प्रतिक्रमण किया इसलिए फिर रहेगा नहीं न?! बहुत भारी कर्म हो तो जली हुई रस्सी जैसा दिखेगा लेकिन हाथ लगाते ही झड़ जाएगा।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

16-17 जून : भारत की राजधानी दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में पूज्यश्री के दो दिन के लिए सत्संग और ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पूज्यश्री का स्वागत दिल्ली के महात्माओं ने पंजाबी स्टाइल में किया। सत्संग में 2200 से भी ज़्यादा महात्मा और मुमुक्षु उपस्थित थें। आसपास के राज्यों से 400 मुमुक्षुओं ने लाभ उठाया। ज्ञानविधि में 850 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। दिल्ली के सेवार्थी महात्माओं के लिए सेवार्थी सत्संग व दादा दरबार का आयोजन हुआ।

20-23 जून : आप्तसंकुल के साधक भाइयों व बहनों का दो दिन के लिए, उनके माता-पिता के साथ सैफ्रोनी मेहसाणा के लिए स्नेहमिलन का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम का आयोजन आप्तसंकुल के साधकों और उनके परिवारों में परस्पर आत्मियता बढ़ें, उस हेतु से हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान लींच में श्री सीमंधर स्वामी के प्रक्षाल-पूजन-आरती, दादा फोटो हिस्ट्री प्रोजेक्ट के अनुभव सेशन, डिम्पल भाई के ज्ञानी के संग अनुभव, पूज्यश्री के साथ भोजन, संकुल की पुरानी यादों की स्पेशल डीवीडी व विविध एक्टिविटी द्वारा सभी माता-पिता को आनंद करवाया गया। साधक भाईयों व बहनों ने माता-पिता को प्रेम से खाना खिलाया और उनकी सेवा का लाभ प्राप्त किया। हर एक साधक व साधिकाओं को बारी-बारी अपने माता-पिता के साथ पूज्यश्री से मिलने का व यादगीरी के तौर पर पूज्यश्री के साथ फैमिली फोटो का अमूल्य लाभ प्राप्त हुआ। साधक भाईयों और बहनों के माता-पिता ने इस कार्यक्रम का लाभ प्राप्त करके धन्यता का अनुभव किया ओर ऐसे कार्यक्रम हर साल हुए ऐसी इच्छा व्यक्त की।

24 जून : पूज्यश्री के साथ एक दिन के लिए अंबाजी यात्रा का आयोजन हुआ, जिसका छः हज़ार से भी ज़्यादा महात्माओं ने लाभ उठाया। लगभग पचास बसों के अलावा ज़्यादात्तर सेन्टरों के महात्माओं अपने वाहन से अंबाजी माताजी के दर्शन के लिए पहुँच गए थे। एक साथ इतने सारे महात्मा आने से अंबाजी मंदिर में बहुत भीड़ देखने मिली। उसके बाद उमियाभवन में पूज्यश्री का विशेष सत्संग हुआ, जहाँ पर महात्माओं ने माताजी के नियम और उन्हें राज़ी करने के लिए क्या करना चाहिए जैसे विविध प्रश्नों पूछे थें। उसके बाद आप्तपुत्र और आप्तपुत्रियों ने पूज्यश्री को मंदिर से प्रसादी के रूप में प्राप्त माताजी की चूंदड़ी पहनाई। पूज्यश्री ने जगत् कल्याण के लिए प्रार्थना व विधि करवाई। दोपहर का भोजन समाप्त करके सभी महात्मा पालनपुर के रिद्धि-सिद्धि प्लोट पहुँचे थे और वहाँ पर पूज्यश्री के साथ गरबा व भक्ति का लाभ प्राप्त हुआ।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

हैदराबाद **दिनांक : 22 सितम्बर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9440697161

स्थल : श्री कच्छ कड़वा पाटीदार समाज, 42-518/1A, स्ट्रीट नं 1, M.J. कॉलोनी, जेवियर स्कूल के सामने, मौला अली.

हैदराबाद **दिनांक : 23 सितम्बर** **समय :** सुबह 11 से 1-30 **संपर्क :** 9885058771

स्थल : श्री कच्छी मित्र मंडल, 3-5-141/2/A/1 & 121, स्ट्रीट नं 2, राम कोटि, किंग कोटि, एडन बाग, हैदराबाद.

चेन्नई **दिनांक : 29-30 सितम्बर - समय की घोषणा बाकी**

समय और स्थल के लिए संपर्क : 7200740000

पूज्य नीरूमाँ तथा पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन '-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA-Canada

- 'SAB-US' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK

- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore – **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia – **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand – **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE – **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)

USA-UK-Africa-Aus. – **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

1 सितम्बर (शनि) शाम 4 से 7 – **सत्संग** तथा **2 सितम्बर** (रवि) सुबह 10 से 12 – **आप्तपुत्र सत्संग**

2 सितम्बर (रवि) शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**

3 सितम्बर (सोम) – रात 10 से 12 – **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**

5 सितम्बर (बुध) सुबह 9 बजे से **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम**

6 से 13 सितम्बर (गुरु से गुरु) **पर्युषण पारायण – आप्तवाणी 13 (उ.) पर सत्संग**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको **AKonnect** पर अथवा अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880 / 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 2 से 7 के दौरान) पर रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (उ.) (गुजराती) पर वाँचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते है।) 3) ओढ़ने-बिछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

Pujya Deepakbhai's Singapore - NZ- Australia Satsang Schedule 2018

Date	Day	City	From	To	Session Title	Venue	Contact No. & Email
14-Sep	Fri	Singapore	8-00 PM	9-30 PM	Aptaputra Satsang	Singapore Post Auditorium Next to: Paya Lebar MRT Station **Singapore**	+65 9190 2826
15-Sep	Sat	Singapore	3-30 PM	7-30 PM	Gnan Vidhi		info@sg.dadabhagwan.org
16-Sep	Sun	Singapore	10-00 AM	12-30 PM	Satsang	Ceylon Road Ganesh Temple, Katong	+65 9190 2826
17-19 Sep	Mon-Wed	Singapore	All Day		Singapore Retreat	Pre-registrations only	+65 9231 3381 info@sg.dadabhagwan.org
21-Sep	Fri	Auckland	7-30 PM	9-30 PM	Satsang	Shri Shirdi Saibaba Sansthan Hall, 12-18 Princess Street, Onehunga, 1061, **New Zealand**	+64 (0)21 061 2379
22-Sep	Sat	Auckland	10-00 AM	12-00 PM	Aptaputra Satsang		+64 (0)21 172 9884
22-Sep	Sat	Auckland	4-00 PM	8-00 PM	Gnan Vidhi		info@nz.dadabhagwan.org
25-27 Sep	Tue-Thu	Sydney	All Day		Sydney Shibir	Pre-registrations only	+ 61 (0)421 127 947 sydney@au.dadabhagwan.org
28-Sep	Fri	Sydney	7-00 PM	9-00 PM	Satsang	Sant Nirankari Satsang Bhawan, 166 Glendenning Road, Glendenning, NSW - 2761, **Australia**	+ 61 (0)421 127 947
29-Sep	Sat	Sydney	10-00 AM	12-30 PM	Swami Pratishtha		+ 61 (0)402 179 706
29-Sep	Sat	Sydney	5-00 PM	6-30 PM	Satsang		
30-Sep	Sun	Sydney	4-00 PM	7-30 PM	Gnan Vidhi		sydney@au.dadabhagwan.org
01-Oct	Mon	Sydney	5-00 PM	7-30 PM	Aptaputra Satsang		
04-Oct	Thu	Perth	6-30 PM	8-00 PM	Satsang	Stirling Adriatic Center, 78 Jones Street, Stirling, WA - 6021, **Australia**	+61 (0)430 148 386
05-Oct	Fri	Perth	6-30 PM	8-00 PM	Satsang		perth@au.dadabhagwan.org
06-Oct	Sat	Perth	4-00 PM	7-00 PM	Gnan Vidhi		

चेन्नई

8 दिसम्बर (शनि) शाम 6-30 से 9-30 – **सत्संग** तथा **9 दिसम्बर** (रवि) शाम 4-30 से 8 – **ज्ञानविधि**

स्थल : अन्ना ऑडिटोरियम, भारतीय सर्जन असोसिएशन, टी.वी. टावर के सामने, चेपॉक, चेन्नई.

10 दिसम्बर (सोम) शाम 6-30 से 9-30 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : उमा सूरज पेलेस, अंगलमैन कोइल स्ट्रीट, चोलई, चेन्नई.

कार्यक्रम संबंधी तथा आवास की सुविधा के लिए **संपर्क :** 9500043099, 9500053099 करे।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

अगस्त 2018
वर्ष-13 अंक-10
अखंड क्रमांक - 154

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

शुरु करो अरीसा सामायिक का प्रयोग

तू 'चंदूभाई' को सामने बैठाकर डाँटेगा तो 'चंदूभाई' बहुत समझदार बन जाएँगे। अगर तू खुद ही डाँटे कि, 'चंदूभाई, ऐसा कहीं करना चाहिए? यह आपने क्या लगा रखा है? और कर ही रहे हो तो अब सीधा करो न?' यदि आप ऐसा कहो तो इसमें क्या गलत है? अत: तुझे 'चंदूभाई' को दर्पण के सामने बैठाकर इस तरह से प्रयोग करना चाहिए। दर्पण में तो चेहरा वगैरह सब दिखाई देता है। इस तरह दर्पण में देखकर एक-एक घंटा डाँटोगे तो शक्ति बहुत बढ़ जाएगी। आपको चंदूभाई की सभी भूलों का पता चलता है न? आपको जितनी भूलें दिखाई दें उतनी अगर आपने एक घंटे तक चंदूभाई को दर्पण के सामने बैठाकर बता दीं तो वह सर्वोत्तम सामायिक है!

\- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.